R. K. Advertising

के माध्यम से 'जैन गजट' में विज्ञापन बुक कराने हेतु सम्पर्क करें-
शेखर चन्द पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता-जैन गजट
मो. 9667168267
रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर
(आर. के. एडवरटाइजिंग)
मो. 8003892803
ईमेल
rkpatni77@gmail.com

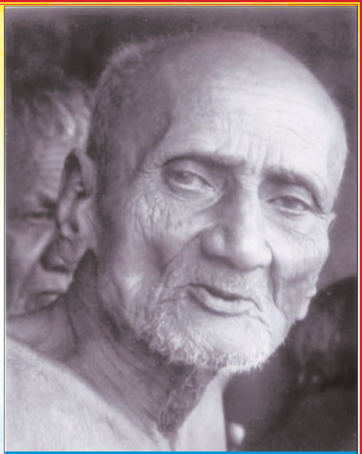

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

आजकल के मॉडर्न बच्चों और उनका माँ-बाप से हर विषय पर टकराव — पृष्ठ 08 पर...

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 31 अंक 46 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 15 सितम्बर 2025, वीर नि. संवत् 2550

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha · jaingazette2@gmail.com

अशोकनगर श्रावक संस्कार शिविर में लोकसभा अध्यक्ष पहुंचे राष्ट्रसंत की उपाधि से विभूषित किया मुनिपुंगव को

सत्य अहिंसा से ही विश्व में शांति होगी, इसके लिए सभी के प्रयास जरूरी हैं

- लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला

"पहली बार जिले में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला मुनिपुगंव के दर्शन करने पधारेः भारतीय संस्कृति सभ्यता से गुलामी के प्रतीकों को हटाया जाना चाहिए, इससे स्वतंत्र का एहसास हो - मुनिपुंगव श्री सुधा सागर जी, झलकियां 'विशेष सुरक्षा बल रहे आकर्षण का केंद्रः लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने दो बार माइक संभालाः राष्ट्र संत की उपाधि देने पर शिविरार्थियों ने खड़े होकर अभिनंदन कियाः ब्रह्मचारी भइया जी को किया नमनः 'धवल वस्त्र धारी शिविरार्थियों को देख लोकसभा अध्यक्ष हुए अभिभूत"

अशोकनगर, 6 सितम्बर। इतिहास में पहली बार मुनिपुंगव श्री सुधा सागर जी महाराज के सान्निध्य में हो रहे अखिल भारतीय श्रावक संस्कार शिविर में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला विशेष विमान से आज प्रातः आठ बजे सीधे सुधामय सभागार स्टेशन रोड पर पहुंच और मुनिपुंगव श्री सुधा सागर जी महाराज को श्रीफल भेंट कर एक सच्चे श्रावक की तरह धर्म सभा में विराजमान हो गये, इस दौरान जैन समाज अध्यक्ष राकेश कासल, महामंत्री राकेश अमरोद, कोषाध्यक्ष सुनील अखाई, उपाध्यक्ष अजित बरोदिया, प्रदीप तारई, राजेन्द्र अमन, मंत्री विजय धुर्रा, मंत्री संजीव भारिल्ल, मीडिया प्रभारी अरविंद कचनार, आडिटर संजय के टी श्री दिगम्बर जैन पंचायत के सदस्यों

शेष पृष्ठ 05 पर........

WONDERFUL 12 Nights / 13 Days
EUROPE
शुद्ध जैन भोजन किचन कारावैन के साथ
7 खुबसूरत देशो की सैर
10 Sep, 23 Sep, 25 Oct, 14 Nov
यूरोप जैन मंदिर के दर्शन
FRANCE, PARIS, ITALY
AUSTRIA, AMSTERDAM
GERMANY, SWITZERLAND

ला: नेमचंद जुगल किशोर जैन तीर्थ यात्रा संघ
VAYUDOOT WORLD TRAVELS PVT. LTD.
Mob : +91 9313338256, 9810408256, 9818312056

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

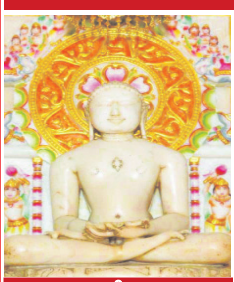

869 साल प्राचीन मूलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण
LIVE
आरती : 7:15 - 7:45 AM
शांतिधारा : 8:30 AM
@jainmandirhasteda
नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9783016885
नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।

हस्तेड़ा जैन मंदिर
दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.
संपर्क सूत्रः
नितिन कुमार पाटनी (मंत्री) 9001255955
मनीष जी गंगवाल (कोषाध्यक्ष) 095880-20330

JK MASALE SINCE 1957

Buy online on jkcart.com
– Breakfast Matlab –
JK POHA
Shudh Khao Swasth Raho...

दशलक्षण महापर्व में लोकसभाध्यक्ष ओम बिड़ला

रमेश जैन एडवोकेट नवभारत टाइम्स नई दिल्ली

नई दिल्ली। प्राचीन श्री अग्रवाल दिगंबर जैन पंचायत द्वारा लाल किला मैदान के भव्य पंडाल में मुनिश्री प्रणम्य सागरजी महाराज के सान्निध्य में आयोजित दशलक्षण महापर्व में सातवें दिन उत्तम तप धर्म की पूजा अर्चना भक्तिभाव से की गई। इस अवसर पर लोकसभाध्यक्ष ओम बिरला ने श्रीफल अर्पित कर मुनिश्री को भावभीनी विनयांजलि अर्पित की। दिगंबर मुनि के दर्शन से भावविभोर ओम बिड़ला ने कहा कि मेरा सौभाग्य है कि मुझे आचार्य श्री विद्यासागरजी के दर्शन और मार्गदर्शन का भी अवसर मिला है। मुझे जैन धर्म, दर्शन और संतों का सान्निध्य शुरू से ही मिलता रहा है। दशलक्षण महापर्व दुनिया का अनोखा पर्व है जो आत्म साधना की पराकाष्ठा तक ले जाता है। जैन धर्म ने दुनिया को अहिंसा का संदेश दिया जो सबसे बड़ा धर्म है। मुनि श्री ने कहा कि व्रत, उपवास और तपस्या से ही मनुष्य का भौतिक और नैतिक विकास होता है। मनुष्य में अपना विरोध और निंदा सुनने की सामर्थ्य भी होनी चाहिए। ऐसा व्यक्ति ही जीवन में उच्च पद को प्राप्त करता है, ओम बिड़ला जी हमारे सामने इसके साक्षात प्रतीक हैं। जैन समाज दिल्ली के अध्यक्ष चक्रेश जैन, अशोक पाटनी आदि ने बिड़ला जी का माल्यार्पण व मुकुट पहनाकर भावभीना स्वागत किया। इस मौके पर बिड़ला जी ने मुनिश्री की पुस्तक नवशतकम और एक कलैंडर का विमोचन भी किया। बिड़ला जी को 'भरत का भारत' ऐतिहासिक चित्र भेंट किया। समारोह में पीके जैन, कुलदीप जैन, ललित जैन, पुनीत जैन, सुशीला पाटनी, कविता जैन, मनोज जैन, जिनेंद्र जैन, कैलाश जैन, नीरज जैन, भरत जैन आदि गणमान्य

जैन समाज के त्याग, तपस्या और संयम का प्रतीक दशलक्षण महापर्व- मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता

स्वराज जैन, नई दिल्ली

प्राचीन श्री अग्रवाल दिगंबर जैन पंचायत द्वारा लाल किला मैदान के भव्य पंडाल में अर्ह योग प्रणेता मुनि श्री प्रणम्य सागरजी महाराज के सान्निध्य में दसलक्षण महापर्व आयोजित हो रहा है। पर्व के चौथे दिन रविवार को मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने श्रीफल अर्पित कर मुनि श्री को भावभीनी विनयांजलि अर्पित की। इस मौके पर उन्होंने कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि दिल्ली को महान तपस्वी दिगंबर संतों का सान्निध्य मिल रहा है। यह दसलक्षण महापर्व त्याग, तपस्या और संयम का विलक्षण पर्व है। यह खाने-पीने का नहीं बल्कि आत्म साधना का महान पर्व है। इससे हमें अद्भुत प्रेरणा मिलती है। मुनि श्री ने अपने आशीर्वचन में उत्तम शौच धर्म की व्याख्या करते हुए कहा कि लालच को त्याग कर संतोष में जीने का नाम ही शौच धर्म की आराधना है। कविता जैन और सुशीला पाटनी ने मुकुट पहनाकर मुख्यमंत्री का स्वागत किया। मुनि श्री ने मुख्यमंत्री को अपनी पुस्तकें भेंट की तो जैन समाज दिल्ली के अध्यक्ष चक्रेश जैन व अशोक पाटनी ने उन्हें 'भरत का भारत' ऐतिहासिक चित्र भेंट किया।

लाल किले से चोरी कलश हापुड़ देहात में बरामद

सौरभ जैन सुमन (कवि)

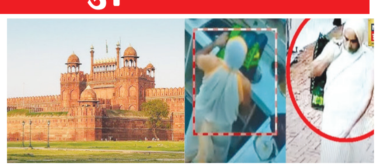

जैन समाज के लिए हर्षोल्लास का विषय है कि जो बहुमूल्य कलश द्रव्य लालकिले से चोरी हुए थे उन्हें बरामद कर लिया गया है। देर रात्रि में दिल्ली क्राइम ब्रांच की टीम द्वारा थाना देहात पुलिस की मदद से एक अभियुक्त भूषण वर्मा पुत्र रणवीर वर्मा उम्र 48 वर्ष निवासी वैशाली कॉलोनी गली न. 11 थाना हापुड़ देहात जनपद हापुड़ जो ड्राइविंग का कार्य करता है को घर पर दबिश देकर गिरफ्तार किया गया। इस कार्य को अंजाम देने वाले श्री विजय गुप्ता पूर्व में सदर मेरठ में थाना प्रभारी रह चुके हैं।

झर का तेला कर श्रीजी से की सुख समृद्धि की कामना

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर। शहर में रेडियो मार्केट कालों का मंदिर में गजानंद जी काला-प्रदीप जी काला-नितिन जी-महेंद्र जी जैन को झर का तेला करने के उपलक्ष में मंदिर जी में समाज बंधुओं द्वारा सम्मानित किया तथा बैंड-बाजों के द्वारा महिलाओं द्वारा मंगल गीत गाते हुए इनके निजी आवास पर ले जाया गया। समाज द्वारा सहर्ष तेला सम्पन्न होने की बहुत-बहुत अनुमोदना की गई।

गुना की सपना जैन बनी आईएएस

पुनीत जैन

गुना की सोनाली केबल्स परिवार की बेटी एवं श्री अनुराग जैन की पत्नी श्रीमती सपना जैन का नाम उन अधिकारियों की सूची में शामिल हो गया है जिन्हें भारत सरकार ने आईएएस पद पर पदोन्नत किया है। हाल ही में जारी गजट अधिसूचना में सपना जैन को 2024 की चयन सूची में स्थान दिया गया है। वर्तमान में वह बुरहानपुर जिले में अपर कलेक्टर के पद पर पदस्थ हैं। सपना जैन 2007 बैच की राज्य प्रशासनिक सेवा की अधिकारी हैं। अपने सेवा काल में उन्होंने कई जिलों में उल्लेखनीय कार्य किए हैं और कुशल प्रशासनिक अधिकारी के रूप में पहचानी गई हैं। गजट अधिसूचना के अनुसार उन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवा मध्य प्रदेश कैडर में पदोन्नत किया गया है।इस खबर के मिलते ही नगर, समाज एवं परिवार के शुभचिंतकों ने बधाइयाँ दी हैं।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

SANTOSH JAIN & ASSOCIATES
SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.

OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस-स्नेहा काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

क्षमा मांगना सरल है किंतु क्षमा करना कठिन है, देव, शास्त्र तीर्थक्षेत्र गुरुओं से पहले क्षमा मांगना चाहिए

राजाबाबू गोधा/राजेश पंचोलिया

बोले आचार्य श्री वर्धमान सागर

टोंक, 8 सितम्बर। आचार्य श्री वर्धमान सागर महाराज जी ससंघ के पावन सानिध्य में क्षमावाणी पर्व पर पुण्यार्जक परिवारों द्वारा श्रीजी का अभिषेक, शांतिधारा किया गया। इस अवसर पर आयोजित धर्म सभा में आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने बताया कि मैं सबको क्षमा करता हूं जिसने क्रोध का त्याग किया है। वही यह कह सकता है सभी से क्षमा मांगना सरल है किंतु क्षमा करना कठिन है क्योंकि मानी व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता है, सभी प्राणियों के प्रति मैत्री भाव रहे, सबको अपने समान समझना मैत्री भाव है , धर्म छोड़ने, क्षमा छोड़ने से वाद विवाद कोर्ट कचहरी होते हैं। सभी साधु क्षमा भाव धारण करते हैं। उन्होंने बताया कि प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज पर राजाखेड़ा में 500 व्यक्तियों ने हमला किया। पूर्वाभास के कारण संघ कमरे के भीतर होने से सुरक्षित रहा किंतु समाजजनों को चोट आई। पुलिस आने पर हमलावरों को गिरफ्तार कर लिया किंतु आचार्य श्री शांतिसागर जी ने उसे क्षमा करके पुलिस को यही कहा कि इन्हें छोड़ दो नहीं तो मैं आहार ग्रहण नहीं करूंगा। यह आचार्य श्री का क्षमा, समता भाव का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह मंगल देशना क्षमावाणी पर्व के अवसर पर आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ने प्रगट की। कार्यक्रम में समाज के प्रवक्ता पवन कंटान ने बताया कि आचार्य श्री ने मंगलमय प्रवचन में आगे बताया कि क्षमा वास्तव में किन से मांगना चाहिए, सबसे पहले भगवान से क्षमा याचना करना चाहिए कि हम आपकी वाणी का, आपके शास्त्रों का पालन नहीं कर रहे हैं, तीर्थक्षेत्रों, मंदिरों, जिनवाणी से क्षमा मांगना चाहिए कि हम आपकी रक्षा नहीं कर रहे हैं। आचार्य सहित सभी साधुओं से क्षमा याचना करना चाहिए। इसके बाद वास्तव में जिससे बोलचाल बैर हो उनसे फिर आपस में एक दूसरे से क्षमा मांगना चाहिए तभी यह पर्व सार्थक होगा। क्षमा विश्व शांति का संदेश है राष्ट्र, समाज, परिवार, क्षमा के अभाव में बिखर जाते हैं क्योंकि कर्मों के उदय से परिस्थितियां ऐसी उत्पन्न होती हैं कि आप एक दूसरे से बैर रखते हैं। प्राचीन मुनियों सुकुमाल मुनि, सुकौशल मुनि और पांच पांडव मुनिराजों की कहानी के माध्यम से बताया कि पूर्व जन्म के बैरी ने इन पर उपसर्ग किया किंतु इन्होंने समता धारण कर उपसर्ग पर क्षमाभाव रखा। बैर से सुख शांति नहीं मिलती। समाज प्रवक्ता पवन कंटान व विकास जागीरदार के अनुसार आज 16 उपवासी मुनि श्री धैर्य सागर जी एवं 32 उपवास करने वाली श्राविका श्रीमती बाला तथा लोकेश के 11 उपवास का पारणा हुआ। कार्यक्रम में दूध, घी, केसर, चंदन सर्व औषधी, नारियल, दाडिम रस तथा अन्य फलों के रसों से भव्य पंचामृत अभिषेक हुए उसके पश्चात श्रीजी की माला पहनने का सौभाग्य श्रेष्ठी श्री पारसचंद, अनिल, सुनील, विनोद, अभिषेक, दर्श सर्राफ परिवार को मिला। श्री दिगंबर जैन नसिया और बड़ा तख्ता जैन मंदिर में सामूहिक क्षमावाणी पर्व आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इसको लेकर सभी लोग एक दूसरे से साल भर में की गई गलतियों के लिए क्षमा याचना करी। इस मौके पर भागचंद फूलेता, धर्मचंद दाखिया, पदमचंद आंडरा, धर्मेंद्र पासरोटिया, श्याम लाल जैन, सुरेशचंद संघी, पप्पु मलारना, महावीर पासरोटियां, महावीर दाखिया, विकास अत्तार, कमल सर्राफ, नीटू छामुनिया, पंकज छामुनिया, मुकेश बरवास, पंकज फूलेता, मुकेश करवर, सोनू पासरोटिया, सुनील सर्राफ, पुनीत जागीरदार, मनीष अत्तार, सुमित दाखिया, अम्मू छामुनिया, अनिल कंटान आदि समाज के लोग उपस्थित थे।

आदिनाथाय नमः | पार्श्वनाथाय नमः | महावीराय नमः

दिगम्बर खण्डेवाल वधु चाहिए

नामः निहाल बिजय गोधा जैन, उम्र 26 (जन्म 17 दिसंबर 1998)
लम्बाई 5FT. 7'', वजन 67 Kg
रंगः गोरा-सांवला
शिक्षाः कम्प्यूटर इंजिनियरींग मुंबई - हैदराबाद - पीटसबर्ग, अमेरिका, वर्तमान में PHD कर रहे हैं।

निवेदनः दिगम्बर जैन खण्डेवाल सुकन्या, शिक्षित, गृह कार्य में दक्ष धार्मिक प्रवृत्ति का परिवार ही

रहवासः मुंबई-कोलकाता, गोत्रः गोधा-कासलीवाल,
पिताः बिजय कुमार गोधा जैन,
'जैन एकता' प्रेमी, समाजसेवी, वरिष्ठ पत्रकार व संपादक,
माँः संतोष कासलीवाल-गोधा जैन, डायरेक्टर, गृहिणी, धार्मिक प्रवृती,
बहनः प्रिया व पायल, विवाह इंदौर, वर्तमान में मुंबई निवासी

संपर्क करें
9322307908

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, -आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी म.सा.

फागी कस्बे सहित परिक्षेत्र के जैन समाज ने मनाया क्षमावाणी पर्व

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

फागी कस्बे सहित परिक्षेत्र के चकवाड़ा, चौरु, नारेड़ा, मंडावरी, मेहंदवास, नीमेडा, लसाडिया तथा लदाना सहित क्षेत्र के जैन धर्मावलंबियों ने पर्यूषण पर्व के समापन बाद 08.09.2025 को क्षमावाणी पर्व हर्षोल्लास पूर्वक मनाया। फागी परिक्षेत्र सहित कस्बे के आदिनाथ जिनालय, बीचला मंदिर, मुनिसुव्रतनाथ जिनालय, पार्श्वनाथ चैत्यालय, चंद्रप्रभु नसिया सहित सभी जिनालयों में श्री जी के कलशाभिषेक हुए। कार्यक्रम में बड़ा मंदिर आदिनाथ जिनालय एवं चन्दप्रभु नसियां में दूध, दही, घृत, बूरा, केसर सर्वोषधि से भव्य पंचामृत अभिषेक हुए तथा श्रीजी की माल की बोली के बाद श्री जी की आरती कर सुख समृद्धि की कामना की गई। कार्यक्रम में सरावगी समाज के अध्यक्ष महावीर अजमेरा एवं समाज सेवी केलास कासलीवाल ने संयुक्त रूप से बताया कि क्षमावाणी पर्व पर बताया कि क्षमा शीलवान का शस्त्र एवं अहिंसक का अस्त्र है, जब तक मन की कटुता दूर नहीं होगी तब तक क्षमावाणी पर्व मनाने का कोई औचित्य नहीं है। कार्यक्रम चातुर्मास समिति के अध्यक्ष मोहनलाल झंडा एवं फागी पंचायत समिति के पूर्व प्रधान सुकुमार झंडा ने बताया कि क्षमा वीरों का आभूषण है, क्षमा वीरों की शोभा है, मजबूत लोग ही क्षमता प्रदान करते हैं।

कार्यक्रम में अग्रवाल समाज के अध्यक्ष महावीर झंडा एवं मंदिर समिति के मंत्री कमलेश चौधरी ने बताया कि इससे पूर्व दिवस पर सांगानेर में 3 नवंबर 2025 को होने वाली जैनेश्वरी दीक्षाओं के नव दीक्षार्थियों मुमुक्षुओं की सकल दिगंबर जैन समाज की तरफसे सामूहिक रूप से पार्श्वनाथ चैत्यालय में गोद भराई का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में सायंकाल बीचला मंदिर से बाल ब्रह्मचारी विकास भैया, बाल ब्रह्मचारी उमंग भैया, ब्रह्मचारी पंकज भैया, ब्रह्मचारी प्रकाश भैया तथा फागी कस्बे में विराजमान आर्यिका सुरम्यमति माताजी ससंघ की संघस्थ ब्रह्मचारिणी किरण दीदी को घोड़ों पर बिठाकर बैंड बाजों के द्वारा भव्यता के नव दीक्षार्थियों की बिन्दौरी निकाली गई। कार्यक्रम में सारे सकल जैन समाज के द्वारा नव दीक्षार्थियों मुमुक्षुओं का जगह-जगह फूल मालाओं से स्वागत किया गया तथा उक्त दीक्षार्थियों की शोभायात्रा को जयकारों के साथ पार्श्वनाथ चैत्यालय तक लाया तथा आर्यिका सुरम्य मति माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में सकल दिगम्बर जैन समाज ने भव्य गोद भराई की।

कार्यक्रम में पांचों नव दीक्षार्थी तथा ब्रह्मचारिणी किरण दीदी की राजाबाबू -चित्रा गोधा, महावीर -मुन्नी अजमेरा गोद भराई करते हुए

32 दिन के उपवास करने वाले त्यागी व्रतियों एवं तपस्वियों को मंदिरों से गाजेबाजे से उतारा

चित्रकूट कालोनी में 32 दिन के उपवास करने वाली अंजू बोहरा का हुआ पारणा - समाज बन्धुओं ने किया अभिनंदन

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर, 9 सितम्बर। षोडशकारण के एक माह, 32 दिन, 16 दिन सोलहकारण के उपवास करने वाले तपस्वियों को मंगलवार, 9 सितम्बर को मंदिरों से गाजे बाजों के साथ उतारा गया। समाज बन्धुओं ने उनको बग्घी में बैठाकर बैण्ड बाजों के साथ भव्य शोभायात्रा निकाली गई। सांगानेर थाना क्षेत्र के चित्रकूट कालोनी में आचार्य सुन्दर सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में 32 दिन के उपवास एवं तप साधना करने वाली 51 वर्षीय अंजू बोहरा को बैण्ड बाजों के साथ शोभा यात्रा के रूप में मंदिर से उतारा गया। कार्यक्रम में मंदिर समिति के अध्यक्ष अनिल जैन काशीपुरा एवं महामंत्री मूल चन्द पाटनी के मुताबिक कालोनी के विभिन्न मार्गों से होते हुए उनका जुलूस उनके निवास स्थान पर पहुंचा जहां समाज बन्धुओं द्वारा जयकारों के बीच उनका अभिनंदन किया गया। इस मौके पर हुई धर्म सभा में आचार्य सुन्दर सागर महाराज ने अपने मंगलमय प्रवचन में धर्म, तप, साधना एवं षोडशकारण के उपवास करने के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि तप साधना करने से इस भव के साथ अगला भव भी सुधरता है।

इस मौके पर मंदिर प्रबंधकारिणी समिति एवं समाज बन्धुओं की ओर से प्रशस्ति पत्र भेंट कर श्रीमती अंजू बोहरा का अभिनंदन किया गया। इस मौके पर राजस्थान जैन सभा जयपुर के उपाध्यक्ष विनोद जैन कोटखावदा, समाजसेवी अनिल जैन बनेठा, मंदिर समिति अध्यक्ष अनिल जैन काशीपुरा, महामंत्री मूल चन्द पाटनी, उपाध्यक्ष प्रकाश बाकलीवाल, कोषाध्यक्ष महेन्द्र सोगानी, एडवोकेट महावीर सुरेन्द्र जैन, नवयुवक मंडल अध्यक्ष एडवोकेट सुरेन्द्र सोगानी, मंदिर समिति पूर्व अध्यक्ष केवल चन्द गंगवाल, महिला मण्डल अध्यक्ष बबीता सोगानी, सुनील जैन सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए, इसी प्रकार अजमेर रोड पर पार्श्वनाथ कालोनी के श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में 68 वर्षीय इन्द्रा अजमेरा को भी 32 दिन के षोडशकारण की तप साधना उपवास करने के उपलक्ष्य में मंदिर से गाजेबाजों के साथ उतारा गया। बग्गी में बैठाकर बैण्ड बाजों के साथ कालोनी में शोभायात्रा निकाली गई। इस मौके पर मंदिर जी में आयोजित सम्मान समारोह में उनका अभिनंदन किया गया।

कौन बनेगा धर्म शिरोमणि प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

लाडनूं, 5 सितंबर 2025। स्थानीय श्री दिगंबर जैन बड़ा मंदिर में पर्यूषण पर्व के आठवें दिन कौन बनेगा धर्म शिरोमणि प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। प्रतियोगिता संयोजिका डॉ. मनीषा जैन ने बताया कि इस प्रतियोगिता में जैन समाज के लगभग 40 लोगों ने दो दिवसीय प्रतियोगिता हेतु नाम दिए जिसमें प्रथम दिन 14 लोग व दो ग्रुपों को कौन बनेगा धर्मशिरोमणि प्रतियोगिता हिस्सा लिया। प्रतियोगिता के मार्गदर्शक डॉ. सुरेंद्र जैन ने जानकारी देते हुए कहा कि सुशीला कासलीवाल पीहू जैन ग्रुप व रूबल-आयु बड़जात्या ग्रुप प्रतियोगिता के विजेता रहे। दसलक्षण पर्व कार्यक्रम आयोजन समिति के संयोजक निर्मल पाटनी ने जानकारी दी कि सभी प्रतियोगियों को पुरस्कार सुरेश कुमार, सुशीला सांतुनु, रिचा कासलीवाल ऋषभ क्लॉथ सेंटर की तरफसे प्रदान किए गए तथा सुरेश कुमार कासलीवाल ने सभी को पुरस्कार प्रदान किया। इस अवसर पर दिगंबर जैन समाज के पदाधिकारी एवं गणमान्यजन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजक डॉ. मनीषा जैन ने किया।

हर्षित लुहाड़िया का धार्मिक परीक्षा परिणाम में प्रथम स्थान

प्रकाश पाटनी, भीलवाड़ा

भीलवाड़ा, 7 सितंबर। अशोक नगर (म.प्र.) में निर्यापक श्रमण सुधा सागर महाराज के सानिध्य में 32 वां श्रावक संस्कार शिविर संपन्न हुआ। पूनम चंद सेठी ने बताया कि शिविर में छह ढाला ग्रंथ का अध्ययन सभी शिविरार्थियों को कराया गया। समापन पर इसकी परीक्षा आयोजित हुई जिसमें सुधा सागर ग्रुप में माणिक्य नगर भीलवाड़ा निवासी शिविरार्थी हर्षित जैन लुहाड़िया ने परीक्षा परिणाम में 97 प्रतिशत अंक लाकर प्रथम स्थान प्राप्त कर गौरव हासिल किया। शिविर में भीलवाड़ा के पूनम चंद सेठी, लादू लाल शाह, कैलाशगंगवाल, राजेंद्र कुमार जैन, प्रकाश सोनी, विशाल शाह, जम्मू कुमार जैन, राजकुमार टोंगिया, हर्षित लुहाड़िया, सुधांश अग्रवाल, सुरेश कुमार जैन, संतोष जैन आदि ने भाग लिया।

श्री वर्धमान स्तोत्र सम्पन्न

जयपुर, 8 सितम्बर। दिगम्बर जैन मंदिर गायत्री नगर महारानी फार्म जयपुर में परम पूज्य मुनि श्री पावन सागर जी महाराज, मुनि श्री सुभद्र सागर जी महाराज ससंघ के आशीर्वाद व सानिध्य में अर्हं श्री वर्धमान महिला समूह द्वारा 7 सितंबर रात्रि 8 बजे से अर्हम योग प्रणेता परम पूज्य मुनि श्री प्रणम्य सागर जी महाराज द्वारा रचित श्री वर्धमान स्तोत्र ऋद्धि मंत्रों के साथ भक्ति पूर्वक सम्पन्न हुआ।

त्याग और तप का अनूठा संकल्पः जयपुर निवासी सर्वेश जैन ने पूरे किए 16 दिन निर्जल उपवास

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर। राजधानी के भांकरोटा स्थित जयसिंहपुरा निवासी सर्वेश जैन ने इस भाद्रपद मास में 16 दिनों तक मौन साधना और निर्जल उपवास (सोलहकरण तप) सम्पन्न किए, उन्होंने पूज्य आचार्य अनेकांत सागर महाराज, गणिनी आर्यिका प्रमुख सुपार्श्वमती माताजी एवं गणिनी आर्यिकारत्न गौरवमती माताजी की प्रेरणा और आशीर्वाद से सर्वेश जैन ने वर्ष 2014 में पहली बार दशलक्षण पर्व पर 10 दिनों के निर्जल उपवास से तप साधना का आरंभ किया था तथा 2014 से 2023 तक उन्होंने प्रत्येक वर्ष दशलक्षण पर्व के दौरान 10 उपवास किए। वर्ष 2024 में उन्होंने 5 दिन का पंचमेरु तप किया और इस वर्ष त्याग साधना को आगे बढ़ाते हुए 16 दिनों तक मौन साधना एवं निर्जल उपवास का संकल्प लिया। जयपुर के वरुण पथ स्थित दिगंबर जैन मंदिर में उपाध्याय उर्जयंत सागर महाराज के सानिध्य में सकल समाज की उपस्थिति और अनुमोदना के साथ सर्वेश जैन ने पारणा किया और 16 दिन के इस कठिन तप का समापन किया। इस अवसर पर समाज समिति वरुण पथ अध्यक्ष एम. पी. जैन, मंत्री ज्ञान बिलाला, समाज श्रेष्ठी सुरेश जैन (बांदीकुई) परिवार, हेमेंद्र सेठी, विनेश सोगानी, पदमचंद जैन भरतपुर वाले, निर्मल शाह, प्रमोद बाकलीवाल, कुलदीप छाबड़ा, नरेश शाह, सुदर्शन पाटनी, गौरव जैन, श्रीमती शैफाली जैन, श्रीमती प्रिया बाकलीवाल, निधि जैन सहित विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित रहे। सभी ने तिलक व माल्यार्पण कर साधना की अनुमोदना की और सर्वेश जैन को 'तपस्वी श्रावक' की उपाधि प्रदान की। इस दौरान समाजजनों ने सर्वेश जैन के पिता राकेश जैन माता आशा जैन को सम्मानित किया। अखिल भारतीय दिगंबर जैन युवा एकता संघ के अभिषेक जैन बिट्टू ने बताया कि पारणा अवसर पर समिति एवं संघ के सदस्यों ने मिलकर सर्वेश जैन को पारणा करवाया। शाम 5 बजे उनके निवास पर राकेश आशा जैन परिवार की ओर से विनतियों के माध्यम से भजन-भक्ति का कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें समाजजनों ने उपस्थित होकर उनके तप की अनुमोदना की।

गुवाहाटी में अध्यक्ष श्री महावीर जी गंगवाल के सानिध्य में भव्य पारणा

शेखर चंद पाटनी/राष्ट्रीय संवाददाता

गुवाहाटी। गुवाहाटी जैन समाज में 8 महिलाओं ने सोलहकारण व्रत व 1 पुरूष ने सोलहकारण व्रत किये तथा 75 जनों ने दशलक्षण व्रत किये, जिनमें 38 पुरूष एवं 27 महिलायें हैं। गुवाहाटी में पारणा की जो सर्वोत्तम विधि है वह काबिले तारीफ है। महावीर भवन में अलग-अलग कमरों में व्रतियों को ठहरा दिया जाता है, वहां परिजन ही नहीं पूरे समाज के साथ कमेटी के लोग भी पारणे में शामिल होते हैं जिससे प्रोग्राम बहुत ही रोचक व आकर्षित बन जाता है। श्री दिगम्बर जैन पंचायत फैंसी बाजार, गुवाहाटी सोलहकारण व दशलक्षण व्रत धारण करने वाले व्रतियों के पुण्य की कोटि-कोटि अनुमोदना, हार्दिक बधाईयां व अनन्त शुभकामनायें व्यक्त करती है। स्वयं गुवाहाटी समाज के लोकप्रिय अध्यक्ष श्री महावीर गंगवाल कमरों में जाकर एक-एक व्रती की स्वास्थ्य पूछते हैं, उनकी कमेटी के मेम्बर भी साथ में रहते हैं। गुवाहाटी समाज में महावीर जी गंगवाल का मैनेजमेन्ट बहुत ही शानदार है। चित्र में व्रतियों की साता (कुशल-क्षेम) पूछने जाते हुए श्री महावीर जी गंगवाल के साथ उपाध्यक्ष महासभा के अशोक छाबड़ा, मनीष छाबड़ा, सुरेश बाकलीवाल, मनोज रारा, जम्बू बड़जात्या। ज्ञात रहे कि गुवाहाटी जैन समाज बहुत दानवीर धर्मात्मा जैन समाज है। अभी गुवाहाटी के दिसपुर क्षेत्र में मां सुर्पाश्वमति माताजी की शिष्या जिन्होंने पूर्वांचल में जिन धर्म, जिनशासन की प्रभावना की है, आर्यिका 105 श्री गरिमामति माताजी व आर्यिका 105 श्री गम्भीरमति माताजी ससंघ का चातुर्मास चल रहा है। गुवाहाटी के फैन्सी बाजार स्थित मन्दिर में अभिषेक, पूजा करने वालों की इतना संख्या रहती है कि इतने विशाल मन्दिर में भी पैर रखने की जगह नहीं मिलती है। यह केवल दसलक्षण की ही बात नहीं है सदैव ही ऐसी प्रभावना रहती है। दसलक्षण पर्व में थोड़ा सा फर्क पड़ जाता है। गुवाहाटी के सभी मन्दिरों में ऐसी ही प्रभावना देखने को मिलती है। पूरे भारत में गुवाहाटी जैन समाज का नाम बहुत ही प्रतिष्ठा के साथ लिया जाता है क्योंकि मैं तो सम्पूर्ण भारत का दौरा करता ही रहता हूँ।

आत्मशुद्धि के महापर्व पर्यूषण के पुनीत अवसर पर गत् वर्ष में हुए ज्ञात-अज्ञात अविनय, राग-द्वेष मनोमालिन्य के लिए क्षमा याचना

क्षमा प्रार्थी/शुभाकांक्षी

प्रबंध कार्यकारिणी समिति श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर चित्रकूट कॉलोनी थाना सांगानेर जयपुर

श्री अनिल कुमार जैन (काशीपुरा) अध्यक्ष, श्री प्रकाश चंद बाकलीवाल (चांवंढ का मढ) उपाध्यक्ष, श्री मूलचंद पाटनी (पंवालिया) मंत्री, श्री सत्यप्रकाश कासलीवाल संयुक्त मंत्री, श्री महेंद्र कुमार सौगानी (चनानी) कोषाध्यक्ष

कार्यकारिणी समिति श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर चित्रकूट कॉलोनी थाना सांगानेर जयपुर

श्री अशोक कुमार सौगानी चनानी वाले, श्री महावीर सुरेंद्र पाटनी (एडवोकेट) भोज्याडा वाले, श्री राहुल सिंघल पंवालिया वाले, श्री संतोष कुमार दोसी (सौध्या), श्री जयकुमार बाकलीवाल झाग वाले, श्री बालमुकुंद सौगानी बोंली वाले, श्री भागचंद सोनी लाखनपुर वाले, श्री विकास दोसी मालपुरा वाले, श्री पदम चंद बाकलीवाल झिलाय वाले, श्री निर्मल कुमार गंगवाल जामडोली वाले, श्री विमल कुमार पांड्या (राहोली), श्री कमल कुमार झांझरी (सूथडा), श्री बाबूलाल वैद (कोटखावदा), श्री अनिल कुमार पाटनी (चोरू), श्री रमेश चंद गंगवाल (निमोडिया), श्री संजय कुमार गंगवाल (तूंगा), ओमप्रकाश कटारिया (राजमहल), श्री विमल कुमार जी गोधा (बोरखंडी), श्री प्रदीप कुमार ठोलिया, श्री अनिल जैन (कोटा), श्री राहुल बाकलीवाल (लांगडियावास), श्री भरत कुमार पांड्या (चाकसू)

विशिष्ट आमंत्रित (निवर्तमान अध्यक्ष) सदस्य

डा. श्री प्रभाकर सेठी, श्री पदम चंद अजमेरा (राहोली), श्री अनिल कुमार पांड्या (बनेठा), श्री प्रकाश चंद सौगानी (चनानी), श्री केवल चंद गंगवाल (निमोडिया)

परामर्श दात्री समिति

श्री कैलाश चंद सौगानी (चनानी), श्री विनोद कुमार गंगवाल, श्री दीपक बोहरा, श्री राजेश पाटनी, श्री पारसमल बाकलीवाल (निमोडिया), श्री सुनील कुमार बड़जात्या (लालसोट), श्री परवेश जैन, श्री कैलाश चंद बैनाडा, श्री प्रदीप कुमार बाकलीवाल (संवारिया), श्री महावीर कुमार सौगानी (बौंली), श्री अशोक कुमार सौगानी (आंधी), श्री पदम चंद पापडीवाल (माधोराजपुरा), श्री सुमत प्रकाश छाबडा (चंदलाई), श्री सत्यनारायण जैन (रामथला), श्री सुरेश कुमार सिंघल (पंवालिया)

श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर, चित्रकूट कॉलोनी, थाना सर्किल सांगानेर जयपुर-302029 (राजस्थान) मो. 8949703463, 9829297487

पाण्डिचेरी में दशलक्षण पर्व धूमधाम से सम्पन्न

दशलक्षण पर्व में पाण्डिचेरी में 'मूकमाटी' नृत्य नाटिका का शानदार प्रस्तुति की गई

श्रीमती अर्चना भरत कोठारी, पाण्डिचेरी

दसलक्षण पर्व में पाण्डिचेरी में मथुरा चौरासी से आशीष भैया जी के सान्निध्य में भक्तामर द्वीप प्रज्जवलन अर्चना की गई जिसमें समाज के 51 परिवार का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। यह कार्यक्रम निकिता जी कोठारी, अर्चना जी कोठारी व अर्चना जी ठोल्या के सान्निध्य में वीतराग मण्डल के सभी अध्यक्ष नवीन जी ठोल्या, सचिव भरत जी कोठारी व उपाध्यक्ष प्रेम जी कासलीवाल के व अन्य सभी सदस्यों के सहयोग से सम्पन्न हुआ। चतुर्दशी के बड़े कलश में प्रेम जी आडिटर, गणपत जी कोठारी, मनीष मार्बल्स, शिखरचन्द जी बाकलीवाल, हुकमीचन्द जी ठोल्या, गजराज जी भरत जी, सुशील जी कोठारी परिवार ने लिया। माला की बोली संजय जी शीतल जी बगड़ा परिवार ने ली। एकम के बड़े कलश की बोली लूणकरण जी पाटनी परिवार ने ली। दसलक्षण व्रत उपवास की खूब प्रभावना हुई।

युगल मुनिराजों ने की नगर के जिनालयों की वंदना

मुरैना (मनोज जैन नायक) पर्यूषण पर्व के समापन और विदाई के अवसर पर युगल मुनिराजों ने नगर के सभी जिनालयों की वेदना की। नगर में चातुर्मासरत जैन संत मुनिराज श्री विलोक सागर जी एवं मुनिश्री विबोध सागर जी महाराज ने नगर भ्रमण करते हुए सभी जिनालयों के दर्शन किए। दोपहर में श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन पंचायती बड़ा मंदिर से भव्य शोभायात्रा के साथ युगल मुनिराज रवाना हुए।

गुवाहाटी में दशलक्षण पर्व

श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर पंचायत गुवाहाटी फैन्सी बाजार SRCB रोड गुवाहाटी के दशलक्षण पर्व पर विधान में पूजा करते हुये गुवाहाटी पंचायत के लोकप्रिय मंत्री श्री वीरेन्द्र सरावगी, महावीर भवन के मंत्री श्री विजय कुमार जी गंगवाल व गुवाहाटी के डायरी के संकलनकर्ता रामचन्द्र सेठी अपने साधर्मी बन्धुओं के साथ पूजा करते हुये।

-शेखर पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

शेष पृष्ठ 1 का............

थूवोनजी अध्यक्ष अशोक टिंगू मिल महामंत्री मनोज भैसरवास शिविर पुण्यार्जक संजीव श्रंगार शालू भारत ने लोकसभा अध्यक्ष का शाल श्रीफल पीत वस्त्र भेंट कर अभिनंदन किया।

लोकसभा अध्यक्ष ने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव मुनिपुंगव श्री सुधा सागर जी महाराज भारत की संस्कृति सभ्यता को राष्ट्र संत के रूप में जन जन तक पहुंचा रहे हैं। आपके विचार अद्भत हैं, आज राष्ट्र संत के रूप में आपको हम प्रतिष्ठित कर अपने आप की प्रतिष्ठा बड़ा रहे हैं। जैन दर्शन जैन विचार मनुष्य के साथ जीव मात्र की चिंता करते है। समाज के लोग दुनिया के किसी भी देश में जायें वहां जैन थाली मिल जाती है, यही तो हमारी संस्कृति है जिसे दुनिया भर में जैन समाज ने फैलाया है। मुनि श्री बहुत काम कर रहे हैं खास तौर पर शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में। मैं भाग्य शाली हूं कि वर्षों से मुझे उनका आशीर्वाद और निकटता का सौभाग्य प्राप्त होने के साथ ही राष्ट्र चिंतन देश के प्रति जो लोगों में उत्साह को जगाते हैं उसे मैंने कोटा में बहुत निकटता से देखा है। कोटा में छात्रावास चिकित्सालय क्या नहीं किया हाडोती अंचल में। मुझे परम पूज्य का बहुत आशीर्वाद मिलता है। इस दौरान राजस्थान के ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर ने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव की कृपा मुझ पर हमेशा रही है। मध्यप्रदेश के अशोक नगर में मुझे मिनी राजस्थान दिख रहा है।

इस दौरान लोकसभा अध्यक्ष ओम विरला, ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर, राकेश मडिया को जैन समाज के संयोजक उमेश सिंघई, मनोज रन्नौद, मनीष सिंघई, श्रेयास जैन पंचायत कमेटी की सदस्यों ने रजत कलश भेंटकर सम्मानित किया।

वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमानसागरजी महाराज के 75 वर्ष पूर्ण होकर 76 वें वर्ष में प्रवेश के अवसर पर विशेष

समन्वय, सद्भावना और परम्परा के प्रति समर्पण के प्रतिनिधि आचार्य श्री वर्धमानसागरजी महाराज

संपादकीय

20वीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज का आचार्यपद प्रतिष्ठापना समारोह 2024-25 में संपूर्ण देश में विशेष उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। परम्परा में आचार्य श्री वीरसागरजी, आचार्यश्री शिवसागरजी, आचार्यश्री धर्म सागरजी, आचार्यश्री अजित सागरजी महाराज के समाज उपयोगी कार्य और उनका दिगम्बर जैन धर्म के प्रति अवदान न केवल अभिनंदनीय है बल्कि जन-जन को जानने योग्य भी है। इसी परम्परा में सन् 1990 में आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज प्रतिष्ठित हुए जिन्होंने इस परम्परा को जीवंत रखते हुए समाज में समन्वय, सद्भावना और संगठन बनाए रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आचार्य वर्धमानसागरजी महाराज का जन्म 18 सितम्बर 1950 को हुआ था। वे अपने जीवन के 75वें वर्ष पूर्ण कर 76वें वर्ष में प्रवेश करेंगे। आईये जानते हैं उनके जीवन की 75 विशेष बातेंः

जन्म से लेकर आचार्य पद तक की 75 विशेष बातें-

1. माता-पिता के लाड़ले 13वें व 14 बच्चों में से एक मात्र जीवित 'यशवंत'।
2. श्री कमलचंद-मनोरमादेवी पंचोलिया की लाड़ प्यार की दुलारी संतान 'यशवंत'।
3. जैन जगत द्वारा सर्वाधिक मनाए जाने वाले भाद्रमास के पर्युषण पर्व के तृतीय दिवस उत्तम आर्जव के दिन 'जन्म दिवस' 18 सितम्बर 1950।
4. आई. टी. आई. व बी. ए. प्रथम वर्ष तक शिक्षा प्राप्त की।
5. सांसारिक जन्म हेतु माता-पिता द्वारा अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी में मान्यता।
6. उसी अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी में आचार्य धर्मसागरजी ने दी दिगम्बर मुनि दीक्षा।
7. 1950 में जन्म, 1955 में प्राथमिक विद्यालय में अध्ययन, 1960 में कक्षा 5वीं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण।
8. दस वर्ष की आयु में माँ मनोरमाजी का स्वर्गवास।
9. प्रथम बार दिगम्बर मुनि के दर्शन सन् 1964 में आचार्य द्वय श्री महावीर कीर्ति, श्री विमलसागरजी के बावनगजा क्षेत्र में दर्शन कर आशीर्वाद पाया कि ÷धर्म मार्ग में खूब आगे बढ़ो÷।
10. अपने दीक्षा गुरु आचार्य धर्म सागरजी के दर्शन मुनि अवस्था में सनावद नगर में।
11. 1965 में आर्यिका इन्दुमतिजी, सुपार्श्वमतिजी, विद्यामतिजी का सनावद चातुर्मास व धार्मिक अध्ययन।
12. 1967 में आर्यिका ज्ञानमति माताजी सहित छह पिच्छी का चातुर्मास सनावद में और धार्मिक संस्कारों की दृढ़ता, निरंतर अध्ययन जारी। संसार के प्रति उदासीनता, वैराग्य पथ का बीजारोपण।
13. चातुर्मास उपरांत आर्थिक ज्ञानमतीजी के मुक्तागिरी विहार में 'यशवंत' की सक्रिय सहभागिता।
14. मुक्तागिरि में 5 वर्ष का ब्रह्मचर्य व शुद्ध भोजन का नियम।
15. उपरांत माताजी के साथ वापिस सनावद फिर इन्दौर - बड़नगर - रतलाम - बांसवाड़ा होकर बागीदौरा पहुंचे जहाँ पुनः आचार्यश्री विमलसागरजी महाराज के दर्शन।
16. आचार्य विमलसागरजी से 1968 में आजीवन ब्रह्मचर्य की घोषणा, बागीदौरा (राजस्थान) में।
17. पुनः करावली (राज.) में आचार्य शिवसागरजी के दर्शन।
18. माताजी की प्रेरणा से श्री गिरनारजी एवं बुंदेलखण्ड की यात्रा कर वापस सनावद।
19. सनावद में ब्र. यशवंत का मन नहीं लगा।
20. पुनः मई 1968 में आचार्य शिवसागरजी, आर्यिका ज्ञानमति माताजी के संघ में पहुंचकर दिगम्बरी दीक्षा की प्रार्थना।
21. माताजी द्वारा समय आने का इंतजार करने को कहा।
22. पेट दर्द होने पर संघ चिंतित, लेकिन संघ के वात्सल्य से स्वस्थ्य व संघ के प्रति विनय भाव का जागरण।
23. ठीक होने पर माताजी ने कहा घर जाना हो तो जा सकते हैं । ब्र. यशवंत का नियम 'आज से आजीवन घर का त्याग'।
24. विनयशीलता में अग्रणी अध्ययनशील ब्र.यशवंत के लिए संघ के मुनिश्री अजित सागरजी द्वारा कहा गया कि ब्र. यशवंत को मुझे सौंपे।
25. 1968 में आचार्य शिवसागरजी के प्रतापगढ़ चातुर्मास में अध्ययन व अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी के लिए विहार।
26. फाल्गुन कृष्ण 13 को अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी में प्रातःकाल समस्त संघ के सम्मुख आचार्य शिवसागरजी से दिगम्बर दीक्षा हेतु निवेदन।
27. मुनि दीक्षा के निवेदन से प्रसन्न मुनि श्री श्रेयांस सागरजी ने अत्यंत प्रसन्न होकर गोद में उठाया।
28. आचार्यश्री ने पूछा - आपने सम्मेद शिखर की यात्रा की है, न कहने पर दीक्षा पूर्व सम्मेद शिखर यात्रा हेतु गुरु आज्ञा से प्रस्थान।
29. ब्र. यशवंत के सम्मेद शिखर जाने के उपरांत आचार्य शिवसागरजी की समाधि।
30. दीक्षा की भावना के साथ अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठी भगवान की निर्वाण स्थली सम्मेद शिखर की भावपूर्ण वंदना।
31. आचार्य शिवसागरजी की समाधि उपरांत मुनि श्री धर्म सागरजी को आचार्य पद देने की तैयारियां।
32. फाल्गुन शुक्ला 8 दिनांक 24.02.1969 को धर्म सागरजी का आचार्य पदारोहण समारोह श्रीमहावीरजी में तय।
33. आर्यिका ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा कि आचार्य पदारोहण के अवसर पर दीक्षा हो जाए ऐसी प्रार्थना करो।
34. मुनिश्री श्रुतसागरजी से परामर्श पश्चात आज्ञा लेकिन प्रश्न कि ब्र. यशवंत तुम्हारे बाल छोटे हैं केशलोंच कैसे होगा।
35. दृढ़ निश्चय से परिपूर्ण ब्र. यशवंत ने कहा कि केशलोंच कर लूंगा।

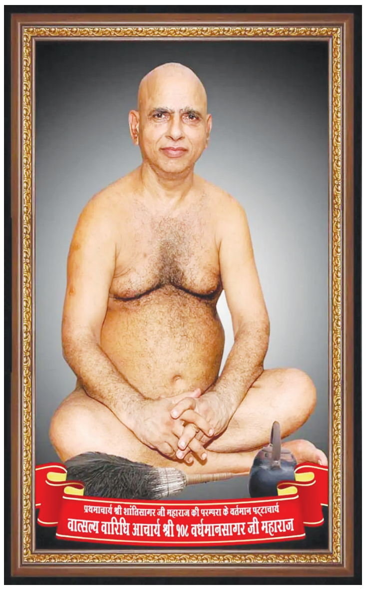

36. मुनि दीक्षा की स्वीकृति के बाद विरोध की लहर, 18 वर्ष के युवक को सीधे दीक्षा देने का विरोध, पिता श्री कमलचंदजी को खबर नहीं, उपस्थित सनावद के लोगों ने भी विरोध किया।
37. आचार्य पद पर श्री धर्म सागरजी के पदारोहण उपरांत 6 मुनि, 3 आर्यिका, 2 क्षुल्लक कुल 11 दीक्षाएं संपन्न। ग्यारह में से सबसे कम उम्र दीक्षार्थी ब्र. यशवंत ने पाया मुनिश्री वर्धमान सागरजी नाम।
38. दीक्षा पश्चात आचार्य विमलसागरजी महाराज का श्री महावीरजी आगमन और दोनों आचार्यों का मिलन व मुनि वर्द्धमान सागरजी ने सर्वप्रथम दिगम्बर मुनि के रुप में ही आचार्य विमलसागरजी को देखा था और आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत भी उन्हीं से लिया था।
39. श्री महावीरजी से मंगल विहार जयपुर की ओर हुआ और युवा मुनि वर्द्धमान सागरजी को आहार चर्या में अन्तराय ने कमजोर कर दिया लेकिन वे अपने संकल्प में दृढ़ रहे।
40. जयपुर खानियांजी में घोर उपसर्ग आंखों से दिखना बंद हो गया। नेत्र ज्योति चली गई। डॉक्टरों ने देखा कहा कि 24 घण्टे के अंदर इंजेक्शन एलोपैथी दवाईयां लेना आवश्यक अन्यथा आंखें चली जाएंगी। आचार्यश्री धर्म सागरजी चिंतित युवावस्था को लेकर, मुनि वर्द्धमान सागर व्यस्त आत्म चिंतन में और चिंतवन के साथ फैसला कि 'प्रसंग आने पर सल्लेखना ले लूंगा, किंतु मैं इन्जेक्शन आदि नहीं लगवाऊंगा'
41. शाम 5 बजे श्री चन्द्रप्रभ जितेन्द्र के चरणों में शान्ति-भक्ति-स्तुति मुनिश्री वर्द्धमान सागरजी द्वारा मुनि अभिनंदन सागरजी की घोषणा जब तक ज्योति वापस नहीं आती छहों रसों का त्याग।
42. तीन घण्टे की ससंघ सामूहिक भक्ति व युवा मुनि वर्द्धमान सागरजी का दृढ़ निश्चय का चमत्कार 52 घण्टों से गई नेत्र ज्योति वापिस आ गई।
43. राजस्थान के टोंक नगर में फरवरी 1971 में दिगम्बरत्व अवस्था में पहला पंच कल्याणक अनुभव किया युवा मुनि वर्द्धमान सागरजी ने।
44. 1971 में आचार्य धर्मसागरजी व आचार्य ज्ञानसागरजी महाराज का मदनगंज - किशनगढ़ में मिलन व भावी आचार्य द्वय मुनि श्री विद्यासागर व मुनिश्री वर्द्धमान सागरजी का 15 दिन साथ रहने व धर्म अध्ययन का अवसर मिला जो ऐतिहासिक है।
45. युवा मुनि वर्द्धमान सागरजी का दिल्ली, उत्तर प्रदेश में विहार हुआ व अनेक आयोजन संपन्न हुए।
46. भगवान महावीर स्वामी के 2500वें जन्म कल्याणक महोत्सव अवसर पर युवा मुनि वर्धमान सागरजी को आचार्य श्री देशभूषणजी, मुनि विद्यानंदजी, मुनिश्री अभिनंदन सागरजी के साथ रहने का सौभाग्य मिला। जैन धर्म के चारों संप्रदाय की प्रतिनिधि पुस्तक समणसुत्तं जो श्री जिनेन्द्र वर्णीजी द्वारा आचार्य विनोबा भावे के निवेदन पर तैयार की गई उसकी अंतिम चर्चा में भी आप आचार्य धर्मसागरजी के साथ सम्मिलित हुए।
47. आचार्य कल्प श्रुत सागरजी महाराज के साथ निरंतर धर्म अध्ययन में लीन होकर अध्ययन किया।
48. अपने दीक्षा गुरु आचार्य धर्म सागरजी महाराज के अभिनंदन ग्रंथ का अभूतपूर्व कार्य मुनिश्री वर्द्धमान सागरजी ने पूर्ण किया।
49. दिसम्बर 1986 में सीकर राजस्थान में आचार्य धर्मसागरजी महाराज के स्वास्थ्य की अनुकूलता न देख श्रावक श्री गुलाबचंदजी गोधा ने आचार्य श्री से पूछा आचार्यश्री इतने बड़े संघ को भविष्य में कौन सम्हाल लेगा? आचार्यश्री धर्म सागरजी ने तुरंत मानो भविष्य देख लिया और बोल पड़े 'म्हारे संघ ने तो वर्धमान सम्हाल सके।' यानि आचार्य महाराज की विलक्षण नजर ने देख लिया था कि भविष्य के आचार्य वर्द्धमान सागर जी होंगे।
50. आचार्यश्री अजित सागरजी महाराज ने अपना स्वास्थ्य प्रतिकूल जान 31 जनवरी 1990 में अपने एक लिखित पत्र में आदेश दिया था कि मेरे उपरांत मुनि वर्धमान सागर को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया जाए। यह युवा मुनि वर्धमान सागरजी की योग्यता का परिणाम था कि उन्होंने मुनि चर्या काल में ही अध्ययन, संघस्थ साधुओं की समाधि में वैयावृत्ति कर, अनेक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं में अपनी उल्लेखनीय भूमिका व नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया था। जिसे दीक्षा गुरु आचार्य धर्मसागरजी ने समझ कर पहले ही कह दिया था कि 'म्हारे संघ ने तो वर्धमान ही सम्हाल सके'।
51. मुनि वर्धमानसागरजी संभवतः ऐसे पहले आचार्य हैं जिनके बारे में तृतीय पट्टाचार्य धर्म सागरजी महाराज ने आचार्य होने के संकेत दिये थे। चतुर्थ पट्टाधीश आचार्य अजित सागरजी महाराज ने उन्हें आचार्य पद पर प्रतिष्ठित करने हेतु अपना लिखित आदेश दिया था।
52. गणिनी आर्यिका सुपार्श्वमति माताजी ने महासभा अध्यक्ष श्री निर्मल सेठी से कहा था कि निर्मलजी आचार्यश्री के आदेशानुसार आप लोग मुनिश्री वर्धमान सागरजी को आचार्य बनाओ या नहीं वो आप जानो किंतु मेरा ज्योतिष ज्ञान कहता है कि वे आचार्य अवश्य बनेंगे, आप पदारोहण समारोह नहीं संपन्न कर सकें तो संघ उन्हें बाद में आचार्य बना लेगा।
53. आषाढ़ शुक्ल 2, 24 जून 1990 को दोपहर 12.35 बजे देश की 20 पिच्छीधारी संत समुदाय, समस्त प्रतिनिधि जैन संस्थाओं के प्रतिनिधियों की उपस्थिति व तीस हजार जैन समाज की उपस्थिति, देश के प्रमुख विद्वानों की उपस्थिति में, आचार्य पुष्पदंत सागरजी महाराज ने हर्षोल्लास के साथ बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज की पट्ट परम्परा के आचार्य पद पर प्रतिष्ठापित किया।
54. आचार्य शांति सागरजी महाराज की परम्परा के पहले आचार्य जिन्हें युवावस्था में अपनी योग्यता से आचार्य पद की जिम्मेदारी प्राप्त हुई।
55. समाज में सामंजस्य - समन्वय के प्रेरणास्त्रोत आचार्य के रुप में नेतृत्वकर्ता आचार्य वर्धमान सागरजी महाराज ने समन्वय का पहला उदाहरण जब दिया जब गींगला में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हेतु उन्हें आमंत्रण देने आई समाज से आचार्यश्री ने दो टूक कहा कि 'समाज एक होगा तो मैं प्रतिष्ठा का आमंत्रण स्वीकार करूंगा।
56. समाज में सामंजस्य को मूल मंत्र बताने वाले आचार्य श्री वर्धमान सागरजी प्रत्येक ग्राम नगर में पहुंचकर प्रत्येक जिनालय के दर्शन करते व समाज को एक रहने का संदेश देते हैं।
57. उनका कहना है कि 'हम अपनी छोड़ेंगे नहीं और दूसरों पर थोपेंगे नहीं।'
58. आचार्यश्री के पैर में एक विशिष्ट चक्र है जो विशेष शारीरिक लक्षण है, साधुओं में यह चक्र राजयोग का चिन्ह है।
59. आचार्य पद पर प्रतिष्ठापित होने के तीसरे वर्ष में ही जैन जगत के सबसे बड़े व अंतर्राष्ट्रीय आयोजन भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक समारोह श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) हेतु सान्निध्य व नेतृत्व करने का आमंत्रण मिला।
60. लगभग 2000 कि.मी. का विहार करने का मन समाज के प्रबल आग्रह पर बनाया और विहार प्रारंभ कर 24 वर्ष पश्चात जन्म भूमि सनावद में भव्य अभूतपूर्व प्रवास हुआ।
61. लगातार विहार करते हुए संपूर्ण देश में भारी धर्म प्रभावना हुई व अनेक समाजजनों ने व्रत ग्रहण कर त्याग मार्ग पर चलना स्वीकार किया।
62. 30 जून 1993 को पहली बार आचार्य वर्धमान सागरजी महाराज विशाल संघ सहित श्रवणबेलगोला पहुंचे। जहां की अभूतपूर्व परम्परा अनुरूप स्वागत हुआ और तत्कालीन प्रधानमंत्री व श्रवणबेलगोला क्षेत्र के सांसद एच. डी. देवेगौड़ा सहित संपूर्ण राष्ट्र आचार्य श्री की आगवानी हेतु पहुंचा।
63. इस अवसर पर महोत्सव में सान्निध्य प्रदान करने आए संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्या सागरजी महाराज के शिष्य व गृहस्थाश्रम के भ्राता मुनि श्री योग सागरजी महाराज ने हर्ष मिश्रित होकर कहा कि ÷अब तक हम सब यहां मास्टर ही मास्टर थे, आज आचार्य ही नहीं प्राचार्य, हेड मास्टर

शेष पृष्ठ........ 11 पर

आत्मा के सॉफ्टवेयर में क्षमा एंटी वायरस इंस्टाल करके रखिये

प्रो. डॉ. अनेकान्त कुमार जैन,

नई दिल्ली। जैन परंपरा में दशलक्षण महापर्व पर दश धर्मों की आध्यात्मिक और व्यावहारिक दोनों दृष्टि से आराधना करने के अनंतर आत्मा समस्त बुराइयों को दूर करके परम पवित्र और शुद्ध स्वरूप प्रगट कर लेती है तब मनुष्य अंदर से इतना भीग जाता है कि उसे अपने पूर्व कृत अपराधों का बोध होने लगता है।

पश्चाताप का भाव – अपनी भूलें एक एक कर याद आने लगती हैं लेकिन अब वह कर क्या सकता है ? काल के पूर्व में जाकर उनका संशोधन करना तो अब उसके वश में नहीं है और अब इन अपराधों का बोझ लेकर वह जी भी तो नहीं सकता।

जो हुआ सो हुआ – लेकिन अब क्या करें ? कैसे अपने अपराधों की पुरानी स्मृतियां मिटा सकूं जो मेरी वर्तमान शांति में खलल डालती हैं।

दोषों की आलोचना और त्याग – ऐसी स्थिति में तीर्थंकर भगवान् महावीर ने एक सुंदर आध्यात्मिक समाधान बतलाया - 'पडिक्कमणं' (प्रतिक्रमण) अर्थात् जो पूर्व में तुमने अपनी मर्यादा का अतिक्रमण किया था उसकी स्वयं आलोचना करो और वापस अपने स्वभाव में आ जाओ और यह कार्य तुम स्वयं ही कर सकते हो, कोई दूसरा नहीं। प्रतिक्रमण करके तुम अपनी ही अदालत में स्वयं बरी हो सकते हो। तुम उन अपराधों को दुबारा नहीं करोगे ऐसा नियम लोगे तो वह 'पचक्खाण' अर्थात् प्रत्याख्यान हो जाएगा। प्रत्याख्यान शब्द का अर्थ है ज्ञान पूर्वक त्याग, जो जाने अनजाने किया उसका प्रतिक्रमण और आगे से नहीं करेंगे उसका प्रत्याख्यान। भगवान् महावीर ने प्रायश्चित करने को आत्म शुद्धि का सबसे बड़ा कारण कहा।

क्षमा पर्व है विश्व मैत्री दिवस – भाद्र शुक्ला अनंत चतुर्दशी के बाद आश्विन कृष्णा एकम् को क्षमावाणी पर्व विश्व मैत्री दिवस के रूप में इसीलिए मनाया जाता है कि हम सबसे पहले अपने प्रति अन्य से हुए अपराधों के लिए उन्हें क्षमा का दान करके भार मुक्त हो जाएं और फिर उनके प्रति अपने द्वारा किए गए अपराधों की क्षमा याचना करके स्वयं भी शुद्ध हो जाएं और अन्य को भी भार मुक्त होने का अवसर प्रदान करें। अव्वल तो किसी से बैर धारण करना ही नहीं चाहिए और यदि हो ही गया है तो उसे ज्यादा दिन संभाल कर नहीं रखना चाहिए।

वायरस की तरह रहता है बैर – ये बैर एक ऐसा वायरस है जो आपकी आत्मा के सारे सॉफ्टवेयर और सिस्टम को करप्ट कर देगा इसलिए क्षमा का एंटीवायरस अपने भीतर हमेशा इंस्टॉल रखें और बीच बीच में बैर का वायरस रिमूव करते रहें।

किसी जीव के लिए यदि दिल में बैर है।
तो मंदिर हमारे लिए सिर्फ एक सैर है।।

क्षमा वाणी है मैसेज नहीं – संवाद हीनता जितना बैर को बढ़ाती है उतना कोई और नहीं। अतः चाहे कुछ भी हो जाए संवाद का मार्ग कभी भी बंद न होने दें। संवाद बचा रहेगा तो सभी संभावनाएं जीवित रहेंगी इसलिए सिर्फ सोशल मीडिया पर मैसेज न करें। अपनी वाणी से साक्षात् या फोन करके कहें तब सच्ची क्षमावाणी होगी अन्यथा इसका नाम बदल जाएगा और 'क्षमा मेसेज पर्व' कहना पड़ेगा और सिर्फ कोरा कहें ही नहीं बल्कि हृदय से मांगें तभी क्षमादाता को पानी पानी कर पाएंगे और उस क्षमा नीर में स्वयं भी भीग पाएंगे।

जैन धर्म सिखाता सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव के प्रति क्षमा का भाव

सबके प्रति मन में दया और क्षमा का भाव रखना सिखाते सभी धर्म

पदम जैन बिलाला, जयपुर

क्षमावाणी, जिसे क्षमा दिवस भी कहा जाता है, जैन धर्म के अनुयायियों के लिए क्षमा करने और क्षमा मांगने का एक महत्वपूर्ण पर्व है। यह पर्व जैन कैलेंडर के अनुसार, दिगम्बर जैन समुदाय द्वारा अश्विन कृष्ण महीने के पहले दिन अर्थात दसलक्षण पर्व के एक दिन बाद मनाया जाता है। क्षमावाणी का पर्व आत्म-शुद्धि और आंतरिक शांति का प्रतीक है। यह एक दूसरों को क्षमा करने और स्वयं की गलतियों के लिए क्षमा मांगने का अवसर प्रदान करता है।

सभी धर्म सिखाते क्षमा भाव - जैन धर्म ही हमें क्षमाभाव रखना नहीं सिखाता है, सभी धर्म यही कहते हैं कि हमें सबके प्रति अपने मन में दया और क्षमा का भाव रखना चाहिए। सिख गुरु गोविंद सिंह जी एक जगह कहते हैं- श्यदि कोई दुर्बल मनुष्य तुम्हारा अपमान करता है, तो उसे क्षमा कर दो, क्योंकि क्षमा करना वीरों का काम है।

ईसा मसीह ने भी सूली पर चढ़ते हुए कहा यही कहा था कि- 'हे ईश्वर! इन्हें क्षमा करना, ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।'

कुरान शरीफ में भी लिखा है - 'जो वक्त पर धैर्य रखे और क्षमा कर दे, तो निश्चय ही यह बड़े साहस के कामों में से एक है।'

स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि तमाम बुराई के बाद भी हम अपने आपको प्यार करना नहीं छोड़ते तो फिर दूसरे में कोई बात नापसंद होने पर भी उससे प्यार क्यों नहीं कर सकते।

जैन धर्म में सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव के प्रति क्षमा भाव - जैन धर्म में क्षमा वाणी पर्व पर संपूर्ण ब्रह्मांड के किसी भी सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव के प्रति यदि कोई भी अपराध किया हो, तो उनसे क्षमा याचना की जाती है। उत्तम क्षमा के लिए शास्त्रों में क्षमा याचना योग्य सभी जीवों का निम्नानुसार उल्लेख मिलता है -

एक इन्द्रिय जीव - पृथ्वी कायिक, जलकायिक, वायु कायिक, अग्नि कायिक, वनस्पति कायिक अथवा सूक्ष्म स्थूल जीव आदि

दो इन्द्रिय जीव - लट, इल्ली, शंख, गिंडोला, कोड़ी, जोंक आदि।

तीन इन्द्रिय जीव - बिच्छु, कुन्था, चींटी, खटमल, पई, घुन आदि।

चार इन्द्रिय जीव - मकड़ी , मच्छर , मक्खी, भँवरा, ब ́आदि।

पाँच इन्द्रिय जीव - संज्ञी, असंज्ञी जीव।

चारों गतियों के जीव - नारकीय, तिर्यंच, मनुष्य, चऊ निकाय के देव।

इस प्रकार जैन धर्म में इस दिन, लोग अपने मन से प्रत्येक जीव के प्रति सभी प्रकार के वैर-भाव, क्रोध और द्वेष को त्यागने का कार्य करते है। क्षमावाणी का पर्व सकारात्मकता, प्रेम और सद्भाव फैलाने में मदद करता है। 'क्षमावाणी' जिसे 'पड़वा धोक' भी कहा जाता है, जिसमें लोग एक-दूसरे से अपनी गलतियों के लिए क्षमा मांगते हैं और 'खोपरा मिश्री' खिलाकर एक-दूसरे को क्षमा करते हैं। दिल से मांगी गई क्षमा हमें सज्जनता और सौम्यता के रास्ते पर ले जाती है। आइए, इस क्षमा-पर्व पर हम अपने मन में क्षमाभाव का दीपक जलाएं और उसे कभी बुझने न दें ताकि क्षमा का मार्ग अपनाते हुए धर्म के रास्ते पर चल सकें।

उत्तम क्षमा।।

दशलक्षण महापर्व में दिल्ली की मुख्यमंत्री का उद्बोधन

रमेश जैन एडवोकेट, नई दिल्ली

नई दिल्ली। प्राचीन श्री अग्रवाल दिगंबर जैन पंचायत द्वारा लालकिला मैदान के विशाल और भव्य पंडाल में अर्ह योग प्रणेता मुनि श्री प्रणम्य सागरजी महाराज के सान्निध्य में आयोजित दस लक्षण महापर्व के चौथे दिन रविवार को मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने श्रीफल अर्पित कर कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि दिल्ली को महान तपस्वी दिगंबर संतों का सान्निध्य मिल रहा है। यह दसलक्षण महापर्व त्याग, तपस्या और संयम का विलक्षण पर्व है। यह खाने-पीने का नहीं बल्कि आत्मसाधना का महान पर्व है। इससे हमें अदभुत प्रेरणा और शक्ति मिलती है। मुनि श्री ने अपने आशीर्वचन में उत्तम शौच धर्म की व्याख्या करते हुए कहा कि लालच को त्याग कर संतोष में जीने का नाम ही शौच धर्म की आराधना है। कविता जैन और सुशीला पाटनी ने मुकुट पहनाकर मुख्यमंत्री का स्वागत किया। मुनि श्री ने सीएम को अपनी पुस्तकें भेंट की तो जैन समाज दिल्ली के अध्यक्ष चक्रेश जैन व अशोक पाटनी ने उन्हें 'भरत का भारत' ऐतिहासिक चित्र भेंट किया। सीएम ने एक कलैंडर का विमोचन भी किया। इसी मौके पर मुनि श्री का 51वां अवतरण दिवस भी मनाया गया। यहां 6 सितंबर तक चलने वाले अर्ह स्वधर्म शिविर में देश भर के लगभग तीन हजार श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

WITH BEST COMPLIMENTS FROM
Padam Chand Jain (Dhakra)
(Vice President-Shri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha)
Mahendra Kumar Jain (Dhakra)
(Working President- Shri Bharatvarshiya Digamber Jain
(Teerth Sanrakshini) Mahasabha T. N. Branch
Pradeep Commercial Interprises
(Iron & Steel Merchants)
56, Sembudoss Street, 2nd Floor, P. B. No 8343, Chennai-600 001
Phone No. 25228522, 25220032 Off. 25206812, 25202601 Resi.
Mobile : P. C. Jain-9444918024 M.k.Jain-9444028522
ASSOCIATE :
Shanti Enterprises
Banglore 080-25266482, Mob. : 09448092260

आजकल के मॉडर्न बच्चों और उनका माँ-बाप से हर विषय पर टकराव

डॉ. संतोष जैन
काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

समाज समय के साथ निरंतर बदलता रहता है। नई पीढ़ी पुराने विचारों और परंपराओं से अलग सोचने लगती है। नए विचार, आधुनिक सोच, नवीन तकनीकें, जीवन के नए तरीके - ये सभी बदलाव समय का हिस्सा बन गए हैं। परंतु इसी बदलाव के बीच सबसे बड़ा सामाजिक संकट बनकर उभरा है - माता-पिता और बच्चों के बीच बढ़ता हुआ टकराव। यह एक ऐसा विषय है, जिस पर सोचने की और समाधान खोजने की बेहद आवश्यकता है।

पहले के समय में माता-पिता और बच्चे के बीच आपसी समझदारी का एक गहरा सम्बन्ध होता था। माता-पिता अपने अनुभव, परंपराओं, धार्मिक आस्थाओं और सामाजिक रीति-रिवाजों के आधार पर अपने बच्चों को सही मार्ग पर चलने का निर्देश देते थे। बच्चों की बातों को ध्यान पूर्वक सुना जाता था और उनके मन की बात समझने का प्रयास किया जाता था। परंतु आज की आधुनिक पीढ़ी ने अपनी सोच को स्वतंत्र बना लिया है। वे अपनी पसंद और विचारों के साथ आगे बढ़ना चाहते हैं। उन्हें लगता है कि वे खुद निर्णय लेने में सक्षम हैं। वे शिक्षा, करियर, पहनावे, दोस्ती, शादी-ब्याह और जीवन शैली के मामलों में अपनी इच्छानुसार फैसले लेना चाहते हैं।

माता-पिता की चिंता यह होती है कि उनके अनुभव के आधार पर ही वे सही निर्णय लेने में सक्षम हैं। वे चाहते हैं कि बच्चे उनकी सलाह मानें, परंपराओं और सामाजिक मर्यादाओं का पालन करें। इसी मतभेद के कारण संवादहीनता उत्पन्न होती है। बच्चों की बातों को माता-पिता अक्सर हल्के में लेते हैं, उन्हें जरा भी समझने का प्रयास नहीं करते। वहीं बच्चे भी माता-पिता की बातों को पुराने जमाने की बकवास समझकर अनसुना कर देते हैं।

यह टकराव कई बार छोटे-छोटे मसलों से शुरू होता है। उदाहरण के लिए - पढ़ाई में कौन सा विषय चुना जाए, करियर के विकल्प क्या होने चाहिए, कपड़े कैसा पहनना चाहिए, दोस्तों के चुनाव में माता-पिता की हिचकिचाहट या शादी में किसके साथ रिश्ता बनाया जाए। कभी-कभी यह विचारों का टकराव बन जाता है। जीवन जीने का तरीका, धार्मिक विश्वास, सामाजिक आचार-व्यवहार। परिणामस्वरूप, परिवार में कड़वाहट आ जाती है। धीरे-धीरे संवाद की खिड़कियाँ बंद होती चली जाती हैं।

अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि कुछ परिवार ऐसे भी बन गए हैं जहाँ यह मतभेद इतना बढ़ चुका होता है कि आपसी रिश्तों में टूटन तक पहुँच जाता है। माता-पिता और बच्चों में आपसी विश्वास कम हो जाता है। एक-दूसरे की भावनाओं का आदर नहीं किया जाता। माता-पिता अपनी चिंता में बच्चों को अपने अनुभव से सही राह पर चलाने की कोशिश करते हैं, जबकि बच्चे इसे अपनी आजादी पर पाबंदी समझते हैं।

समाधान के लिए सबसे जरूरी है - समझदारी और संवाद। माता-पिता को चाहिए कि वे अपने अनुभवों को थोड़ी विनम्रता से बच्चों के साथ साझा करें, न कि जबरन थोपें। बच्चों को चाहिए कि वे अपने माता-पिता की चिंता को समझें, क्योंकि वे उनके हित में ही बोलते हैं। दोनों पक्षों को एक-दूसरे की सोच का सम्मान करना चाहिए। खुले दिल से बातचीत करनी चाहिए, बिना आलोचना या क्रोध के।

आज का युग डिजिटल युग है। बच्चों की सोच खुली और स्वतंत्र हो चुकी है। ऐसे में माता-पिता को यह स्वीकार करना होगा कि बदलाव समय का हिस्सा है। जब माता-पिता स्वयं लचीलापन दिखाएँगे और बच्चों की बात समझने का प्रयास करेंगे, तभी आपसी दरारें भरेंगी। साथ ही, बच्चों को भी यह समझना होगा कि माता-पिता का अनुभव उनके लिए एक अनमोल उपहार है, जिसका सम्मान करना उनका कर्तव्य है।

अंततः, परिवार एक समाज की सबसे छोटी इकाई है। यदि इसमें प्रेम, समझदारी, विश्वास और संवाद का सामंजस्य बना रहेगा, तो एक स्वस्थ समाज का निर्माण होगा। तभी पीढ़ियों का अंतर, विचारों की दूरियाँ, आधुनिकता और परंपरा का विरोध समाप्त हो पाएगा। एक सशक्त, प्रेमपूर्ण और समझदार परिवार ही सुखी समाज की नींव रखेगा।

यह लेख दो भागों में इस समस्या का विश्लेषण करेगा -

1. टकराव के कारण - क्यों बढ़ रहा है यह अंतर?

2. समाधान - कैसे पुल बनाया जाए पीढ़ियों के बीच?

साथ ही हम इसमें उदाहरणों, वास्तविक किस्सों, और महान लोगों के विचारों (नवजमे) को शामिल करेंगे ताकि विषय और अधिक प्रभावशाली बने।

भाग 1 - टकराव के कारण - क्यों बढ़ रहा है यह अंतर?

(1) सोच और दृष्टिकोण का अंतर - हर पीढ़ी अपने समय की परिस्थितियों से आकार लेती है।

पुरानी पीढ़ी (माता-पिता) - उनके जीवन में संघर्ष, अभाव और कठिनाइयाँ अधिक थीं। उन्होंने मेहनत, त्याग और अनुशासन से अपना जीवन बनाया। उनके लिए स्थिरता, सुरक्षा और समाज की प्रतिष्ठा सर्वोपरि है।

नई पीढ़ी (बच्चे) - इन्हें अपेक्षाकृत बेहतर सुविधाएँ मिलीं। तकनीक, इंटरनेट और वैश्विक संस्कृति के संपर्क में होने से वे स्वतंत्रता, आत्म-अभिव्यक्ति और प्रयोगधर्मिता को महत्व देते हैं। यही अंतर सोच में टकराव पैदा करता है।

गाँधीजी ने कहा था - ''हर पीढ़ी को अपनी राह खुद बनानी होती है, लेकिन वह अपनी जड़ों से अलग होकर नहीं चल सकती।''

(2) करियर और पढ़ाई को लेकर विवाद - आज अधिकांश विवाद बच्चों की पढ़ाई और करियर विकल्पों पर होते हैं।

माता-पिता चाहते हैं कि बच्चा डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड अकाउंटेंट या पारंपरिक सुरक्षित करियर चुने।

बच्चे अपनी रुचि के अनुसार नए क्षेत्र - डिजिटल मार्केटिंग, गेमिंग, फिल्म, आर्ट्स, फैशन डिजाइनिंग, या स्टार्टअप चुनना चाहते हैं।

परिणाम - बच्चा दबाव में आकर पढ़ाई करता है, तो न तो खुश रह पाता है और न ही सफल और यदि माता-पिता के खिलाफ जाकर अपनी राह चुनता है, तो रिश्तों में दूरी बढ़ जाती है।

उदाहरण - राजस्थान का एक लड़का डांस में करियर बनाना चाहता था। माता-पिता उसे चार्टर्ड अकाउंटेंट बनाना चाहते थे। संघर्ष के बाद वह घर छोड़कर मुंबई चला गया। बाद में टीवी शो से प्रसिद्ध हुआ, लेकिन अपने माता-पिता से रिश्ते टूट गए। यहाँ समस्या यह नहीं कि किसका चुनाव सही है, बल्कि समस्या यह है कि दोनों की सोच का मेल नहीं बैठ पाया।

(3) शादी-ब्याह के फैसले - यह सबसे बड़ा विवाद का विषय है। माता-पिता अक्सर जाति, समाज और परिवार की इज्जत के आधार पर जीवनसाथी चुनना चाहते हैं। बच्चे प्यार, समझ और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्राथमिकता देते हैं। 'लव मैरिज बनाम अरेंज मैरिज' आज सबसे चर्चित टकराव है। कई मामलों में तो हालात इतने बिगड़ जाते हैं कि बच्चे घर छोड़ देते हैं या माता-पिता समाज के दबाव में बेटे-बेटियों से रिश्ता तोड़ लेते हैं।

उदाहरण - दिल्ली का मामला - लड़की ने अपने माता-पिता की पसंद के खिलाफ शादी की। कुछ वर्षों बाद जब समस्याएँ आईं तो वह माता-पिता के पास लौटी, परंतु रिश्तों की दरार इतनी गहरी थी कि वह पूरी तरह से कभी नहीं भर सकी। यह दर्शाता है कि टकराव सिर्फ रिश्ते नहीं बिगाड़ता, बल्कि जीवन भर का पछतावा भी दे सकता है।

(4) पहनावा, दोस्ती और जीवनशैली - माता-पिता परंपरागत कपड़ों, संस्कारों और सादगी को महत्व देते हैं। बच्चे आधुनिक फैशन, दोस्तों के साथ घूमने-फिरने, पार्टियों और सोशल मीडिया को प्राथमिकता देते हैं। छोटी-छोटी बातों पर भी बड़ा विवाद हो जाता है - 'यह कपड़े मत पहनना', 'रात को देर तक बाहर क्यों रहते हो?', 'सोशल मीडिया पर इतना समय क्यों बर्बाद करते हो?'

स्वामी विवेकानंद का कथन यहाँ प्रासंगिक है - 'हर आत्मा स्वतंत्र है और उसे अपनी राह चुनने का अधिकार है, परंतु स्वतंत्रता का अर्थ अनुशासनहीनता नहीं है।'

(5) पीढ़ियों के बीच संवाद का अभाव - सबसे बड़ी समस्या यह है कि माता-पिता और बच्चे एक-दूसरे से खुलकर बात नहीं करते। माता-पिता आदेश देने की शैली में बोलते हैं। बच्चे समझने की बजाय विद्रोह करने लगते हैं।

परिणाम - एक-दूसरे को समझने की बजाय आरोप-प्रत्यारोप होते हैं। रिश्ते तनाव पूर्ण हो जाते हैं।

उदाहरण - एक परिवार में पिता ने हमेशा बच्चों को आदेश दिए - ÷तुम्हें यही पढ़ना है, यही करना है।÷ बच्चा कभी अपनी बात कह ही नहीं पाया। धीरे-धीरे वह मन ही मन दूर होता गया और बाद में माता-पिता से पूरी तरह अलग हो गया।

भाग 2 - समाधान - कैसे पुल बनाया जाए पीढ़ियों के बीच?

(1) संवाद और सुनने की कला संवाद ही हर रिश्ते की नींव है। माता-पिता बच्चों की राय को गंभीरता से सुनें। बच्चे माता-पिता के अनुभव को सम्मान दें। ÷पहले सुनो, फिर समझो, और उसके बाद निर्णय लो।÷ यही नियम रिश्तों को बचा सकता है।

कन्फ्यूशियस ने कहा था - ÷हर रिश्ते की जड़ है - सम्मान और संवाद।÷

(2) संतुलन - परंपरा और आधुनिकता का मेल - माता-पिता को चाहिए कि बदलते समय को स्वीकार करें। बच्चे को चाहिए कि परंपराओं का सम्मान करें। यदि दोनों थोड़ा-थोड़ा झुक जाएँ, तो बड़ा टकराव भी सहज समाधान पा सकता है।

उदाहरण - एक लड़की फैशन डिजाइनिंग पढ़ना चाहती थी। माता-पिता चाहते थे कि वह सुरक्षित नौकरी करे। समझौते के बाद उन्होंने उसे डिजाइनिंग पढ़ने दी, लेकिन साथ ही MBA भी कराया। बाद में लड़की ने सफल बुटीक खोला और माता-पिता भी गर्व महसूस करने लगे।

(3) करियर के मामले में स्वतंत्रता और मार्गदर्शन - माता-पिता को चाहिए कि बच्चों को उनके टैलेंट और रुचि के अनुसार करियर चुनने दें। बच्चे को चाहिए कि निर्णय लेने से पहले माता-पिता के अनुभव और सलाह को सुनें। करियर को लेकर संवाद और शोध-आधारित निर्णय सही रास्ता दिखा सकता है।

(4) विवाह संबंधी विवाद का समाधान - माता-पिता को समझना चाहिए कि शादी सिर्फ सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं, बल्कि दो जीवन का साथ है। बच्चों को भी यह समझना चाहिए कि माता-पिता समाज और रिश्तेदारों के दबाव को झेलते हैं। यदि दोनों पक्ष खुलकर अपनी भावनाएँ साझा करें, तो समाधान संभव है।

उदाहरण - मुंबई का एक परिवार - बेटे ने अपनी पसंद की लड़की से शादी करनी चाही। पहले माता-पिता नाराज हुए, परंतु जब उन्होंने लड़की और उसके परिवार से मिलकर समझा, तो अंततः खुशी-खुशी विवाह स्वीकार कर लिया।

(5) संस्कार और अनुशासन की आवश्यकता - माता-पिता को चाहिए कि बचपन से ही बच्चों में संस्कार, अनुशासन और जिम्मेदारी का भाव जगाएँ। बच्चों को चाहिए कि स्वतंत्रता के साथ जिम्मेदारी निभाएँ और परिवार की इज्जत का ध्यान रखें। स्वतंत्रता और अनुशासन साथ हों, तो टकराव की गुंजाइश कम हो जाती है।

महावीर स्वामी ने कहा था - 'सच्चा संयम वह है, जिसमें स्वतंत्रता और जिम्मेदारी दोनों का संतुलन हो।'

निष्कर्ष - आजकल के मॉडर्न बच्चों और माता-पिता के बीच टकराव एक गंभीर सामाजिक समस्या बन चुकी है। परंतु यदि हम इसकी जड़ों को देखें तो यह सोच, अपेक्षाओं और संवाद की कमी का परिणाम है। माता-पिता को चाहिए कि बच्चों की स्वतंत्रता और उनकी सोच को सम्मान दें। बच्चों को चाहिए कि माता-पिता के अनुभव और त्याग को समझें। रिश्तों को बचाने का एक ही रास्ता है - सम्मान, संवाद और संतुलन। यदि दोनों पीढ़ियाँ थोड़ी-थोड़ी झुक जाएँ, तो रिश्ते मजबूत हो सकते हैं। वरना टकराव केवल कड़वाहट, दूरी और पछतावे की ओर ले जाएगा। कवि हरिवंश राय बच्चन की पंक्तियाँ इस संदर्भ में सटीक बैठती हैं - 'मन का हो तो अच्छा है, न हो तो और भी अच्छा है।'

यानी रिश्तों में कभी समझौता करना पड़ता है, और यही समझौता जीवन को सुंदर बनाता है।

श्रद्धांजलि

संयमित जीवन जीने वाले पं. जीवनलाल जी ने उत्तम संयम के साथ किया देह विलय

राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद
सह सम्पादक जैन गजट

मृत्यु एक शाश्वत सत्य है लेकिन मृत्यु का आलिंगन करना, उसे स्वीकार कर सल्लेखना धारण करना बिरले ही पुरूषों को सौभाग्य मिलता है। समाधिमरण की भावना में हम पढ़ते है ''धर्मात्मा'' निकट हो, चर्चा धरम सुनावें'' ''दिनरात मेरे स्वामी मैं भावना यह भाऊं देहान्त के समय में तुमको न भूल जाऊं''। ''तेरी छत्र छाया भगवन मेरे सिर पर हो, मेरा अंतिम मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।'' आदि भावना भाते हैं। अपने 93 वर्ष के सफ्त सुदीर्घ, स्वास्थ्य, मंगलमय जीवन जीने वाले अनेक आत्माओं को भव्यात्मा बनाने वाले, अनेक शिष्य-प्रशिष्यों के साथ अपने जीवन को आदर्श बनाने वाले उत्तर प्रदेश, ललितपुर के सुप्रसिद्ध विद्वान, सिद्धान्ताचार्य पण्डित श्री जीवन लाल जी का देह विलय अत्यन्त समता पूर्वक, सल्लेखना के साथ पर्युषण पर्व की पावन बेला में उत्तम संयम धर्म की आराधना के साथ परम पूज्य आचार्य श्री निर्भय सागर जी महाराज के सम्बोधन के साथ 2 सितम्बर, 25 को प्रातः 9.45 बजे हो गया। वे 93 वर्ष के थे, उन्होंने अपने जीवन में जो किया वह किसी पीएचडी से कम नहीं है। आईये, जानते हैं उनका गौरवमयी जीवनः-

सिद्धान्ताचार्य, प्राचार्य, पण्डित, सम्पादक, प्रकाशक रहे। सागर जिले के विंदवासन ग्राम में सन् 1933 को जन्म लेकर आपने अनेक दिगम्बर मुनियों की शिक्षा स्थली, मूर्धन्य विद्वानों की शिक्षा स्थली पण्डित गोपालदास बरैया दिगम्बर जैन सिद्धान्त संस्कृत महाविद्यालय मुरैना, श्री स्याद्वाद सिद्धान्त संस्कृत महाविद्यालय ललितपुर में प्राचार्य पद का दायित्व निर्वहन कर अनेक दशकों तक जैन सिद्धान्त का अध्यापन कराया और स्वयं ने आत्मसात् भी किया। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संघ मथुरा के कार्यालय में प्रबंधक रहते हुए मुख पत्र ''जैन सन्देश का प्रकाशन'' भी आपने नियमित रूप से कराया। आपने रहली, पटनागंज, शाहपुर, शाढ़ौरा, कोलारस, आगरा में भी अपनी उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान की। संस्कृत महाविद्यालय मोराजी सागर, बनारस सहित देश के अनेक स्थानों पर आप प्रवचनार्थ जाते रहे। अ. भा. शास्त्री परिषद्, विद्वत् परिषद् के सक्रिय सदस्य रहते हुए आपने अनेक मुनिराजों को सोनागिर हस्तिनापुर में जैन दर्शन और सिद्धान्त का अध्ययन कराने में सहयोग किया। आप आयुर्वेदाचार्य भी थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी पण्डित जी भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के मुख पत्र जैन गजट के सम्पादक श्री सुधेश जैन, लखनऊ के पूज्य पिता हैं। पूज्य पण्डित जी की धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला देवी जैन की समाधि सल्लेखना सप्तम प्रतिमा के व्रत ग्रहण कर आर्यिका रत्न आदर्शमति माता जी के सान्निध्य में क्षेत्रपाल तीर्थ पर हुई थी। पूज्य पण्डित जी के प्रति हार्दिक विनयांजलि सहित

प्रख्यात समाजसेवी देव शास्त्र गुरु के परम भक्त श्री अनिल जैन बनेठा परिवार को मिला भगवान की माल का सौभाग्य

राजाबाबू गोधा संवाददाता

जयपुर 8 सितम्बर। श्री चित्रकूट कॉलोनी स्थित महावीर दिगम्बर जैन मंदिर में प्रवासरत आचार्य श्री सुंदर सागर महाराज, आर्यिका चिन्तनमती माताजी के दशलक्षण, पंचमेरु व तेला करने वाले तपस्विनियों का महापारणा महोत्सव रविवार को हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम में इससे पूर्व शनिवार को अनन्त चतुर्दशी के पावन अवसर पर चौबीस भगवान की पूजा अभिषेक किए गए। कार्यक्रम में आचार्य श्री सुन्दर सागर जी महाराज के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य महावीर सौगाणी परिवार को तथा शास्त्र अखिलेश जी, विविध जी झांझरी राहोली वालों को प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में वरिष्ठ एडवोकेट समाज सेवी महावीर सुरेंद्र जैन बताया कि भगवान की माल की बोली श्रेष्ठी प्रसिद्ध समाजसेवी अनिल जैन, नितिन जैन, विपिन जैन बनेठा परिवार को प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में समाज द्वारा बनेठा परिवार के श्री अनिल कुमार बनेठा-श्रीमति उषा, नितिन जैन, निशा जैन, विपिन जैन, परमा जैन, आशीष बैद, अंकित शाह, महावीर सुरेंद्र जैन एडवोकेट सहित अन्य परिवारजनों का स्वागत किया गया। सभी उपवास करने वालो को दीपक बोहरा परिवार द्वारा सम्मानित किया गया।

पर्यूषण महापर्व के सातवें रोज आज उत्तम तप धर्म की पूजा अर्चना हुई हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न

फागी संवाददाता

फागी कस्बे के पार्श्वनाथ चैत्यालय में विराजमान आर्यिका सुरम्यमति माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में अग्रवाल सेवा सदन में वर्षा कालीन वाचना में पर्यूषण महापर्व के पावन अवसर पर सातवें दिन उत्तम तप धर्म की पूजा अर्चना हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुई। कार्यक्रम में सौधर्म इन्द्र परिवार के रामस्वरूप, शिखर चंद, राजेंद्र कुमार, सिद्ध कुमार, पवन कुमार, जितेंद्र कुमार, सचिन, सौरभ, देवांशु, अतिशय जैन मोदी परिवार जनों के द्वारा महा शांतिधारा करने के बाद दसलक्षण महामंडल विधान पर 24 अर्घ्य समर्पित कर सुख समृद्धि की कामना की गई। इसी कड़ी में बोली के माध्यम से दूसरी शांतिधारा इन्हीं के सौधर्म इंद्र परिवारजनों ने शांतिधारा करके धर्म लाभ प्राप्त किया। इसी कड़ी में पार्श्वनाथ चैत्यालय में आर्यिका सुरम्यमति माताजी ने उत्तम तप धर्म पर प्रकाश डालते हुए श्रृद्धालुओं को बताया कि उत्तम तप का मतलब शरीर, मन और वाणी को संयमित करके आत्मा से बंधे कर्मों को नष्ट करना, जो आत्मा को शुद्ध और उन्नत बनाकर मोक्ष की ओर ले जाती है, उन्होंने कहा कि उत्तम तप का मुख्य उद्देश्य अशुभ कर्मों को नष्ट करना है जो आत्मा की अशुद्धियों के समान है और जन्म मरण का कारण बनते हैं, उन्होंने बताया कि उत्तम तप धर्म वह आचरण है जो इंद्रियों एवं इच्छाओं को वश में रखकर आत्म-शुद्धि और कर्म क्षय के द्वारा मोक्ष की ओर ले जाता है। कार्यक्रम में चातुर्मास समिति के महामंत्री संतोष बजाज ने बताया कि उक्त कार्यक्रम बाल ब्रह्मचारिणी कनक दीदी के दिशा निर्देश में विभिन्न मंत्रोच्चारणों के द्वारा संगीतकार हर्ष जैन एंड कंपनी मध्य प्रदेश की मधुर लहरियों के बीच सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में सरावगी समाज के अध्यक्ष महावीर अजमेरा एवं चातुर्मास समिति के पारस मोदी ने बताया कि नव देवता, देव, शास्त्र, गुरु, मूलनायक भगवान की पूजा की गई। सोलहकारण जी, पंचमेरु, दसलक्षण विधान में उत्तम तप धर्म, 24 तीर्थंकरों की पूजा, जिनवाणी मां की पूजा, स्वयंभू स्तोत्र, तथा आचार्य सुन्दर सागर जी महाराज, आर्यिका सुरम्यमति माताजी सहित विभिन्न दिगम्बर आचार्यों, आर्यिकाओं तथा विभिन्न तीर्थंकरों की पूजा अर्चना की गई।

धर्म जाग्रति संस्थान ने क्षमा पर्व पर उपाध्याय वृषभानंद जी ससंघ को श्रीफल समर्पित कर क्षमा याचना की

जयपुर। अखिल भारतवर्षीय धर्म जागृति संस्थान प्रांत राजस्थान के प्रतिनिधि मंडल द्वारा आचार्य वसुनंदी महामुनिराज के वरिष्ठ शिष्य झोटवाड़ा में विराजित उपाध्याय वृषभानंद जी मुनिराज को श्रीफल समर्पित कर क्षमावाणी पर्व पर उत्तम क्षमा याचना की गई।

कार्यक्रम में संस्थान के प्रांतीय अध्यक्ष पदम जैन बिलाला ने बताया कि संस्थान के सदस्यों ने मध्याह्न में चल रहे स्वाध्याय में भाग लिया जहाँ उपाध्याय श्री ने समझाया की धन किसी को सुख नहीं देता। मानव धन के चक्कर में सुख शांति खो देता है। उन्होंने कहा कि केवल भाव अर्थात दृष्टि बदलने की देरी है सृष्टि तदनुसार अपने आप बदल जाएगी।

स्वाध्याय के पश्चात् सभी ने श्रीफल समर्पित कर गुरु के प्रति किसी भी प्रकार की जाने अनजाने में हुई असाधना, भूल, के लिए मन वचन काय से क्षमा याचना कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इधर सातवीं बार दस दिन के व्रत करने वाले व्रती निर्मल पाटोदी ने उपाध्याय श्री को श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद लिया साथ ही संस्थान के संरक्षक ओम प्रकाश काला मामाजी, बिमल कुमार बाकलीवाल झोटवाड़ा, कोषाध्यक्ष पंकज लुहाड़िया थड़ी मार्केट, मंत्री जीतू गंगवाल प्रताप नगर, पवन पांड्या एवं झोटवाड़ा समाज के मंत्री नवीन पांड्या आदि ने माला दुपट्टा शाल एवं साफा पहना कर अभिनंदन किया। झोटवाड़ा समाज द्वारा संस्थान के प्रान्तीय अध्यक्ष का सम्मान किया गया। इस अवसर पर संस्थान के महेश काला, सोभाग अजमेरा, राजेंद्र ठोलिया, सिद्ध सेठी, नरेन जैन, महीप जैन, महेंद्र बसवा वाले, अमित पाटनी आदि तथा झोटवाड़ा समाज की गरिमामय उपस्थिति रही।

शांतीनाथ महामंडल विधान की हुई पूजा अर्चना

फागी/चकवाडा

धर्म परायण नगरी चकवाडा के नेमीनाथ जिनालय में अनन्त चतुर्दशी के पावन पर्व पर समाज बन्धुओं द्वारा प्रातः अभिषेक, शांतिधारा बाद अष्ट द्रव्यों से पूजा अर्चना की गई, कार्यक्रम में जैन महासभा के प्रतिनिधि राजाबाबू गोधा को समाजसेवी एडवोकेट विनोद जैन बाकलीवाल ने बताया कि जिनालय में शांतिनाथ महामंडल विधान की पूजा अर्चना करने के बाद जैन धर्म 12 वें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य का जयकारों के साथ सामूहिक रूप से मोक्ष का प्रतीक निर्वाण लाडू चढ़ाकर सुख समृद्धि और खुशहाली की कामना की गई, इसी कड़ी में मंदिर समिति के नरेंद्र गंगवाल एवं हरकचंद गंगवाल ने बताया कि कार्यक्रम में अशोक कुमार-विमल कुमार बाकलीवाल, नरेंद्र कुमार-दिलीप कुमार गंगवाल, महावीर प्रसाद-मोहित कुमार बाकलीवाल, हरकचंद- टीकम चंद गंगवाल, परिवारजनों ने कार्यक्रम में सहभागिता निभाते हुए धर्म लाभ प्राप्त किया।

कार्यक्रम में मंदिर समिति की अगुवाई में धर्मगुणामृत ट्रस्ट गुणस्थली पर अभिषेक, शांतिधारा, अष्ट द्रव्यों से पूजा अर्चना कर सुख समृद्धि की कामना की गई। उक्त कार्यक्रम में गुणस्थली पर शशांक जैन पुत्र एडवोकेट विनोद कुमार जैन ने शांति धारा करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

सांगानेर परिक्षेत्र के श्योपुर दिगम्बर जैन मंदिर में मनाई अनन्त चतुर्दशी

संवाददाता

जयपुर, 6 सितम्बर। सांगानेर परिक्षेत्र के प्रतापनगर श्योपुर स्थित श्री चन्द्रप्रभू दिगम्बर जैन मंदिर में शनिवार को अनन्त चतुर्दशी पर्व हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। इस मौके पर चौबीस तीर्थंकरों की पूजा के बाद सायंकाल दशलक्षण समापन कलश किये गए। इस मौके पर समाज श्रेष्ठी नेमीचन्द, महावीर कुमार चेतन कुमार बाकलीवाल निमोडिया वालों ने मूलनायक भगवान 1008 श्री चन्द्रप्रभु की श्री जी का माल का सौभाग्य प्राप्त किया। बाकलीवाल परिवार निमोडिया द्वारा वर्ष 2007 से लगातार माल का सौभाग्य प्राप्त किया जा रहा है। इस वर्ष 2025 में भी पुण्य का संचय हुआ है। मंदिर समिति के अध्यक्ष दिलीप पाटनी एवं अन्य पदाधिकारियों ने निमोडिया परिवार का भाव भरा हार्दिक अभिनंदन किया। उक्त कार्यक्रम का समापन श्री जी की महाआरती के बाद हुआ।

बेहरोज के अति प्राचीन श्री पार्श्वोदय तीर्थ के जीर्णोद्धार एवं अतिक्रमण हटाने के लिए सरकार से मिला आश्वासन

जिनेन्द्र जैन

जयपुर। अल्पसंख्यक वर्ग के जैन समुदाय के श्रमण पावन सागर जी महाराज के द्वारा जैन धर्मायातनों एवं पुरातत्व के संरक्षण के लिए विगत् कई वर्षो से चलाई जा रही मुहिम पर सरकार द्वारा कोई ठोस कार्यवाही नहीं होने के कारण 26-27 अगस्त को मीडिया से वार्ता कर 3 सितम्बर शाम लगभग ढाई बजे तक सरकार कोई ठोस आश्वाशन नहीं आने पर सचिवालय के बाहर हजारों श्रावक - श्राविकाओं के साथ आमरण अनशन करने की घोषणा की थी। राजस्थान सरकार के द्वारा अपनी तरफ से भीलवाड़ा के विधायक अशोक कुमार कोठारी को भेज कर बेहरोज के अतिप्राचीन श्री पार्श्वोदय तीर्थ की जीर्णोद्धार करने की अनुमति प्रदान करने तथा तीर्थ क्षेत्र पर हो रहे अतिक्रमण को जल्द हटाने का आश्वासन दिया, जिसके बाद श्रमण पावन सागर जी महाराज ने आमरण अनशन का कार्यक्रम स्थगित कर दिया।

चकवाड़ा में शांतिनाथ महामंडल विधान की हुई पूजा अर्चना

फागी/चकवाडा

धर्म परायण नगरी चकवाडा के नेमीनाथ जिनालय में अनन्त चतुर्दशी के पावन पर्व पर समाज बन्धुओं द्वारा प्रातः अभिषेक, शांति धारा बाद अष्ट द्रव्यों से पूजा अर्चना की गई। समाजसेवी एडवोकेट विनोद जैन बाकलीवाल ने बताया कि आज जिनालय में शांतिनाथ महामंडल विधान की पूजा अर्चना करने के बाद जैन धर्म 12 वें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य का जयकारों के साथ सामूहिक रूप से मोक्ष का प्रतीक निर्वाण लाडू चढ़ाकर सुख समृद्धि और खुशहाली की कामना की गई, इसी कड़ी में मंदिर समिति के नरेंद्र गंगवाल एवं हरकचंद गंगवाल ने बताया कि कार्यक्रम में अशोक कुमार- विमल कुमार बाकलीवाल, नरेंद्र कुमार-दिलीप कुमार गंगवाल, महावीर प्रसाद-मोहित कुमार बाकलीवाल, हरकचंद-टीकम चंद गंगवाल, परिवारजनों ने कार्यक्रम में सहभागिता निभाते हुए धर्म लाभ प्राप्त किया। कार्यक्रम में मंदिर समिति की अगुवाई में धर्मगुणामृत ट्रस्ट गुणस्थली पर अभिषेक, शांतिधारा, अष्ट द्रव्यों से पूजा अर्चना कर सुख समृद्धि की कामना की गई। उक्त कार्यक्रम में गुणस्थली पर शशांक जैन पुत्र एडवोकेट विनोद कुमार जैन ने शांति धारा करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

जैन गजट को शीघ्र आवश्यकता है

1895 से प्रकाशित हो रहे जैन समाज के सर्वाधिक प्रसार संख्या वाले जैन गजट साप्ताहिक के सदस्य बनाने, विज्ञापन बुक करने एवं जैन समाज के धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों के समाचार भेजने हेतु देश भर में जगह जगह संवाददाताओं की शीघ्र आवश्यकता है। आकर्षक कमीशन एवं अन्य लाभ योग्यतानुसार। आवेदन जैन गजट के वाट्सऐप नं. 7505102419 या 9415108233 पर भेजिये। आवेदन प्राप्त होने पर आपसे संपर्क किया जावेगा।

संपर्क - जैन गजट, ऐश बाग, लखनऊ, मो. 9415008344, 7607921391, 7505102419, Email- jaingazette2@gmail.com www.jaingazette.com

उन्नीसवीं पुण्यतिथि

जन्म :
7 सितम्बर 1921

महाप्रयाण :
19 सितम्बर 2006

स्मृतिशेष धन्नालाल जी काला

बधाल निवासी कोलकाता प्रवासी

आपकी अनुकरणीय ओजस्वी, उत्कृष्ट धार्मिक, सामाजिक, व्यापारिक एवं पारिवारिक कर्त्तव्यबद्धता, सरलता, उदारता हम सभी का सदैव पथ-प्रदर्शित करती रहेगी।

उन्नीसवीं पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धांजलि

धन्नालाल भागचन्द काला एवम् समस्त काला परिवार

JK®
MASALE
GROUP

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 01. मैं आगे भी पढ़ना चाहती हूं, क्या मेरी यह इच्छा पूरी होगी और मुझे क्या उपाय करना चाहिये - सोनम जैन, इन्द्रापुरम

उत्तर - श्री भक्तामर जी का 2 नं. का काव्य इच्छा पूर्ति करने वाला होता है। आप 2 नं. काव्य की 1 माला रोजाना फेरें और आप आगे पढ़ाई करेंगी।

प्रश्न02. कोर्ट कचहरी से मुक्ति के लिये क्या करें? क्या भक्तामर स्तोत्र से कोर्ट कचहरी से मुक्ति मिल जायेगी - अमरचन्द जैन, रोहणी, दिल्ली

उत्तर - अगर आपको भक्तामर स्तोत्र में श्रद्धा है तो 18वां काव्य निश्चित रूप से फायदा करता है। 18वें काव्य का यंत्र जेब में रखें जब भी कोर्ट जाना हो तथा 18वें काव्य की माला फेरें।

प्रश्न 03. हमारे परिवार में कलह रहती है। श्री भक्तामर स्तोत्र की बहुत महिमा है हमें इसे किस प्रकार पढ़ना चाहिये - मोनी, मुम्बई

उत्तर - प्रातःकाल सूर्य उदय के पश्चात् रोजाना यंत्र के सामने हल्की आवाज में पढ़ने से घर की नकारात्मक ऊर्जा नष्ट हो जाती है।

प्रश्न 04. गुरूजी, जय जिनेन्द्र, मेरी स्मरण शक्ति बहुत कमजोर है। मुझे क्या करना चाहिये - सुमन, सूरत

उत्तर - आपको भी श्री भक्तामर स्तोत्र का 6वां काव्य ध्यान रखना चाहिये, उसकी माला फेरें।

गुरु जी से संपर्क सूत्र-
9990402062
826755078

शेष पृष्ठ 6 का......

हमारे बीच है।

64. अनेक संघों के अनेक साधुओं के साथ उनका मान-सम्मान, बहुमान, वात्सल्य व समन्वय के साथ आचार्यश्री वर्द्धमान सागरजी महाराज ने अपना कुशल नेतृत्व महामस्तकाभिषेक समारोह में प्रदान किया।

65. चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज की जन्म स्थली भोज गांव में पहुंचने वाले परम्परा के प्रथम आचार्य जिनके स्वागत में श्रावक कह उठे कि 'हमें ऐसा लग रहा है कि वर्धमान सागर के रुप में पुनः आचार्य शांतिसागरजी महाराज आ गए हों।

66. मदनगंज-किशनगढ़ में 1995 में आचार्य श्री के सान्निध्य में सर्वतोभद्र महामण्डल विधान हुआ जिसमें 35 वर्ष बाद संपूर्ण दिगम्बर समाज पहली बार एकत्रित हुई व आपस में स्नेह भोज कर एक स्वस्थ्य परम्परा का प्रारंभ हुआ।

67. समन्वय-सामंजस्य के प्रतिनिधि आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित आचार्य वर्द्धमान सागरजी महाराज का संत-पंथ-ग्रंथ के नाम पर या पंथ की पुष्टि के नाम पर आज तक कोई विवाद दर्ज नहीं है। उनका स्पष्ट कहना है जहां कि जैसी परम्परा है उसका पालन होना चाहिए। यह जैनागम के अनेकांत का उदाहरण अपनी चर्या के माध्यम से आचार्य श्री प्रदर्शित करते हैं।

68. आचार्यश्री के नाम पर उनके आशीर्वाद प्रेरणा आदि से किसी भी नवीन तीर्थ आदि का संचालन नहीं है।

69. 2006 में पुनः आचार्यश्री वर्द्धमान सागरजी महाराज ने श्रवणबेलगोला के बारह वर्षीय आयोजन में दूसरी बार अपना कुशल नेतृत्व प्रदान कर पुनः जैन धर्म की प्रभावना में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

70. कर्नाटक, तमिलनाडु के प्राचीन तीर्थों के दर्शन व उनकी विशेषताओं को समाज के सम्मुख रखा व दक्षिण भारत के प्राचीन वैभव से समाज को परिचित कराया।

71. तमिलनाडु में स्थित आचार्य कुन्दकुन्द की तपोस्थली पौन्नुरमलै में चातुर्मास कर आचार्यश्री ने तमिलनाडु के तीर्थों की वंदना हेतु भारतवर्ष की समाज को प्रेरित करते हुए उत्तर-दक्षिण को एक करने का कार्य किया।

72. अपने चर्याकाल में अनेक चमत्कारों के सृजक लेकिन चैतन्य चमत्कार की ओर लक्ष्य।

73. अनेक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव मे नेतृत्व, लेकिन प्रतिष्ठा की विशुद्धि का पूर्ण ध्यान। 74. कोलकाता व सम्मेदशिखरजी में पंथवाद से दूर समन्वय का अभूतपूर्व संदेश, बुंदेलखण्ड के तीर्थ पपौराजी कुण्डलपुर में चातुर्मास में धर्म प्रभावना के साथ समाज को जोड़ने का कार्य।

75. अपने जीवन का एक मात्र लक्ष्य स्व-पर कल्याण इस हेतु अपनी 'चर्चा' व 'चर्या' का समागम करते हुए हित-मित-प्रिय वचन बोलना व 'मूलाचार' व परम्पराचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज द्वारा स्थापित परम्पराओं को आदर्श मानकर अपने संघ का संचालन निर्दोष चर्या के साथ करना।

- राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद, सह सम्पादक

पुष्पेन्द्र जैन की 112वीं जयंती पर तीन साहित्यकारा हुई सम्मानित

वीर पीयूष जैन,
मंत्री 'जैन मिलन लखनऊ'

लखनऊ। जैन मिलन लखनऊ द्वारा यूपी प्रेस क्लब में कवि 'पुष्पेन्दु' जैन जी की 112 वीं जयंती के सुअवसर पर आयोजित सम्मान समारोह की अध्यक्षता वीर शैलेन्द्र जैन (संरक्षक-भारतीय जैन मिलन), मुख्य अतिथि - मा. मुकेश शर्मा (सदस्य विधान परिषद, उ.प्र. शासन), अति विशिष्ट अतिथि- श्री राघवेन्द्र शुक्ल (जनसम्पर्क अधिकारी मा. रक्षामंत्री भारत सरकार) एवं विशिष्ट अतिथि-वीरांगना राजकुमारी पुष्पेन्दु जैन (धर्मपत्नी - कवि पुष्पेन्दु जैन) के रूप में मंच पर शोभायमान रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ माँ शारदे एवं कवि पुष्पेन्दु जैन के चित्र पर माल्यार्पण, दीप प्रज्वलन एवं पुष्पेन्दु जी द्वारा रचित सरस्वती वंदना उनकी बेटियों द्वारा सस्वर पढ़ी गई। सभी के प्रति संस्था के अध्यक्ष वीर डा. ए. के. जैन ने स्वागत भाषण दिया। इस अवसर पर कवि पुष्पेन्दु जैन का पूरा परिवार उपस्थित रहा। वीरांगना राजकुमारी पुष्पेन्दु जैन जी ने सभी के प्रति विशेषकर जैन मिलन लखनऊ के लिए आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का सफल संचालन एवं आभार प्रदर्शन मंत्री वीर पीयूष जैन ने किया। इस अवसर पर वीर सुकुमाल जैन (मुख्य संयोजक), वीर संजय जैन (कोषाध्यक्ष), पूर्वाध्यक्ष वीर विशाल जैन, नलिनकांत जैन, वीर पर्यूषण कुमार जैन, अवधेश 'नमन', नवीन शुक्ल 'नवीन', अनिल मिश्र, मृत्युंजय प्रसाद गुप्त, पूनम अग्रवाल, सुधा, आरती, डॉ. रमा अग्रवाल एवं डा. उमेश चन्द्र श्रीवास्तव आदि की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही।

वैवाहिक विज्ञापन
वधु चाहिये

पारस जैन, जन्म 12/01/1984, अविवाहित, जन्म स्थानः मुरादाबाद, कलरः फेयर, जैन, गोत्र गोयल, एम.कॉम, एलएलबी, पिताः अभिनंदन प्रसाद जैन, दिल्ली, संपर्क सूत्रः 9897938140, 9310499477, पताः 17, प्रेमपुरी, नया संसार प्रेस, जैन मंदिर वाली गली, मुजफ्फरनगर-251002 (उ.प्र.)

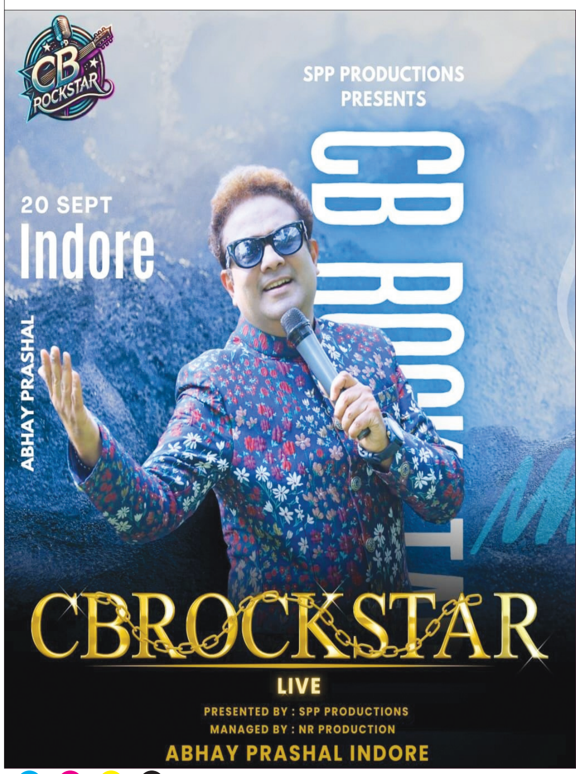

दशलक्षण पर्व एवं क्षमावाणी पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ
DOLPHIN WATERPROOFING
आधुनिक टेक्नोलॉजी से छत को रखे वाटरप्रूफ, हीटप्रूफ, वेदर प्रूफ पायें सीलन, लीकेज एवं गर्मी से राहत व बिजली के बिल में भारी बचत करें।
छत व दीवारों का बिना तोड़फोड़ के सीलन का निवारण
For Your New & Old Construction
DR. FIXIT WATERPROOFING EXPERT
RAJENDRA JAIN
Dr. Fixit Authorised Project Applicator
Mo. 80036-14691
116/194, Agarwal Farm, Mansarovar, Jaipur

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगबर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एसप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर लोर मिल्स कपाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सपादक -सुधेश कुमार जैन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबा. 08290950000

महामंत्री
प्रकाशचंद्र जैन बड़जात्या
Mob- 09840213132

कोषाध्यक्ष
पवन गोधा
मो. 9311198985

प्रधान सम्पादक
कपूरचन्द जैन (पाटनी)
मो. 09864118950, 0 9854050969
Email- k.c.jain39@gmail.com

परामर्शक सदस्य
शिवचरणलाल जैन, मैनपुरी
मो. 09219160350
सुरेश जैन 'सरल', जबलपुर
मो. 09425412374
बसन्त कुमार शास्त्री, शिवाड़
मो. 08107581334

सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com
dmahasabha@yahoo.com

सह सम्पादक (मानद)
डॉ. श्री महावीर शास्त्री, सोलापुर
मो. 09422457582
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
डॉ. सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से कोरियर से मंगाने पर
अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र. रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन
देने हेतु सम्पर्क-
7607921391, 7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल jaingazette2@gmail.com पर भेजें

दिगम्बर जैन समाज के प्रमुख श्री दशलक्षण पर्व समारोह की सानन्द सम्पन्नता पर आत्म शुद्धि के महापर्व क्षमावाणी के अवसर पर विगत वर्ष में हमसे जाने-अनजाने में मन-वचन-काय से हुई भूलों के लिए अपने अन्तःकरण को निर्मल करते हुए आप सभी से हृदय से क्षमा प्रार्थी हैं तथा सभी जीवों पर क्षमा भाव रखते हैं।

गुवाहाटी के दानवीर धर्मात्मा

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

धनराज नारायणी देवी बगड़ा चेरिटेबल ट्रस्ट गुवाहाटी/विजय नगर

श्रीमती सुमन कासलीवाल, गुवाहाटी
श्रीमती रूबी पाटनी, गुवाहाटी
श्रीमती चन्दा देवी पहाड़िया, गुवाहाटी
डॉ. बीना बड़जात्या, दिल्ली

श्रीमती सोनम कासलीवाल, गुवाहाटी
श्रीमती राजकुमारी रारा, गुवाहाटी
श्रीमती अरूणा छाबड़ा, गुवाहाटी
श्रीमती कुसुम देवी बिनायक्या, गुवाहाटी

सुश्री अन्नू छाबड़ा
पंकज सेठी, गुवाहाटी
ओम प्रकाश सोनी, गुवाहाटी
नेमीचन्द छाबड़ा, गुवाहाटी

प्रकाश किरण काला
अनिल कुमार बैद
सम्पतलाल बाकलीवाल, खारूपेटिया
श्रीमती रतनदेवी पांड्या, गुवाहाटी

विज्ञापन प्रेषक: R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com
हेड ऑफिस-मदनगंज किशनगढ़, ब्रांच आफिस- जयपुर, इंदौर, सुरत, बाम्बे, कोलकाता, गुवाहाटी

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92

Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on
Every Monday, wednesday and thursday

डाक पंजीयन संख्या :
SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh,
Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233,
7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,
....
....
....

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-,
दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।